सेठिया जैन ग्रन्थालय-पुस्तक नं. ३८

# श्री प्रकरण संग्रह—भाग २ जो.

[ स्वर्गस्थ पं मुनिराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए संशोधीने तैयार करेला ७७ थोकडानो संग्रह. ]

प्रकाशक,
धर्मचंद्रजी तत्पुत्र भैरोंदानजी तत्पुत्र जेठमल सेठिया
बीकानेर—निवासी.

प्रथम आवृत्ति प्रत २००० संवत १९८० ई स १९२४ वीर संवत २४५०

श्री "वीर-शासन प्रिन्टींग प्रेस" मां शा केशवलाल दलसुखभाईए छाप्युं के काळुपुर टंकशाळ-अमदावाद

मूल्य रु. १

# प्रस्तावना

श्रीमत्पार्श्वजिनं नत्वा, स्मृत्वा च गुरुदेवताम् ।
प्रकरणानि संगृह्य, ग्रन्थोऽयं लिख्यते मुदा ॥

स्वर्गस्थ पंडित महाराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए प्रकरण संग्रहना बीजा भागना लेखनकार्यनो प्रारंभ करता उपर आपेला श्लोकवडे मंगलाचरण करेलुं हतुं, परन्तु एवा मंगलाचरणवडे प्रारंभेला ग्रंथने प्रकाशमां आवेलो तेओ श्री जोई न शक्या. आजे तेमना अमकट ग्रंथने प्रकट करी तेनो लाभ लेवा इच्छनारा मुमुक्षुओनी समीपे तेने रजु करी, स्वर्गस्थ पंडित महाराजश्रीनुं स्मरण करवानुं प्रकाशकने माटे अवशिष्ट रह्युं छे. काळनी गति गहन छे.

उत्तराध्ययन सूत्रना २८ मा अध्ययनमां मोक्षना चार अंग कहेला छे (१) ज्ञान, (२) दर्शन, (३) चारित्र अने (४) तप आ चारे मोक्षमार्गना हेतुओमां दशवैकालिक सूत्रमां "पढमं नाणं तओ दया" ए शब्दोवडे ज्ञानने प्रथम पंक्तिमां मूकवामां आव्युं छे, अने ते यथार्थ ज छे. ज्ञानवडे ज हेय ज्ञेय उपादेय पदार्थोनी समज मनुष्यमां आवी शके छे, अने ए रीते ते चारित्रशील बनी जीवननुं साफल्य करे छे ज्ञाननुं आटलुं बधुं माहात्म्य छे.

द्रव्यगुणपर्यवना ज्ञानवडे करीने मनुष्य इहलोकमां तथा परलोकमां पोतानी परिस्थितिनुं भान प्राप्त करे छे. ज्यांसुधी मन वैराग्यथी रंगित थतुं नथी त्यांसुधी मोक्षनी श्रेणीपर आत्मा चढी शकतो नथी अने ज्यांसुधी द्रव्यगुणपर्यवनुं ज्ञान मनुष्यने प्राप्त थतुं नथी त्यांसुधी वैराग्यनी स्फुरणा पण थती नथी. द्रव्यगुणपर्यवनो विस्तार जैन सिद्धान्तोमां मोटा प्रमाणमां आपवामां आवेलो छे, परन्तु बधा सिद्धान्तोनुं सम्यक्

प्रकारे ज्ञान मेळववानु सौ कोईने एकसरखुं सुलभ होतुं नथी. आथी जिज्ञासुओने माटे जैनागमोमांथी प्रकरणो छूटां पाडीने आपवामां आवे छे तो तेनो लाभ सारा प्रमाणमां लेवामा आवे छे. आ प्रकरणो थोडा वखतमां द्रव्य–गुणपर्यवनुं ज्ञान प्राप्त करवा माटे घणां उपयोगी पुरवार थयां छे अने तेथी जूदा जूदा प्रकाशको तरफथी तेना जूदा जूदा संग्रहो प्रसिद्ध थया छे. एवी ज रीते आ एक वधु संग्रह पण प्रसिद्ध करवामां आवे छे.

स्व. पंडित महाराजश्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए तैयार करेला अने स्व पूज्य महाराज श्री लाधाजी स्वामीए सुधारेलो प्रकरण संग्रहनो पहेलो भाग घणा वर्षो अगाउ प्रसिद्ध थयो हतो अने त्यारपछी सुधारावधारा साथे तेनी पांच आवृत्तिओ प्रसिद्ध थई छे. आथी संग्रहोनी लोकप्रियता ए उपरथी मालूम पडी आवे छे. आ संग्रह पण स्व महाराजश्रीए लखावी सुधारीने तैयार करी राखेलो हतो, परन्तु तेमना अवसानथी ते अप्रकट दशामां ज रह्यो हतो. १९७२ ना चातुर्मासमां पंडित महाराजश्री गुलाबचंद्रजी स्वामी, मुनि श्री वीरजी स्वामी, पंडित श्री रत्नचंद्रजी स्वामी इत्यादि साधुवर्योना दर्शनार्थे अमदावाद मुकामे जतां अने आ संग्रह मुनि श्री खुशालचंद्रजी पासे जोवामां आवतां ते प्रसिद्ध करीने मुमुक्षुओने तेनो लाभ आपवानी उत्कंठा मने थई आवी; परन्तु ए ग्रंथनो हस्तलेख छापखानामां मोकली आपवा जेटलो शुद्ध अने सगवडभर्यो नहोतो, एटले तेनी नवी नकल करावी तेने सुधारी आपवा मे महाराज श्री गुलाबचंद्रजी स्वामीने विनति करी. महाराजश्रीए पोतानी नादुरस्त तबीयत छतां ते सुधारी आपवानी अने छेवटनां प्रुफो तपासी आपवानी कृपा करी छे, ते तेओश्रीनो मारा पर परम उपकार थयो छे तेमनी एटली कृपाने परिणामे आजे आ ग्रंथ आटला सारा स्वरूपमां तैयार थई शक्यो छे.

प्रकरण संग्रहना प्रथम भाग करता आ भागमां लेखनशैली वधारे सुगम्य राखी छे. जे वखते ते प्रथम प्रसिद्ध

थयो ते वखत करता अत्यारे भाषा–व्याकरणमा गुजराती भाषा आगळ वधी छे अने जूनी ढबना लखा थी ते
आधुनिक वाचकोने केटलीक वार दुर्गम पण लागे छे आ सग्रहमा पण जैन परिभाषा तो वापरी ज छे, परन्तु
वाक्यरचना आदिमा अने अर्थवाहकतामा बनी तेटली वधारे स्पष्टता करी छे अने ए कार्यनो श्रम प. मुनिराज श्री
गुलाबचद्रजी स्वामीए लीधो छे

पुस्तकने सारा कागळमा अने मोटा अक्षरमा छापवानो हेतु तेना वाचनमा सरलता थाय ए प्रकारनो छे.
परन्तु विनामूल्ये वहेंचवानो
आवा ज्ञानना उपकरणो तो जेम बने तेम विनामूल्ये वहेंचाय तेमा ज लाभ रह्लो छे, परन्तु विनामूल्ये वहेंचवानी
वस्तुओ केटलीक वार अनधिकारीना हाथमा पण जाय छे अने तेथी ज्ञाननी आशातना थाय छे. आ कारणथी आ
पुस्तकनु मूल्य राख्यु छे खरु परन्तु ते पडतर करता पण ओछु राख्यु छे अने ते द्रव्य ज्ञानप्रचारमा ज वापरवामा
आवशे. जिज्ञासुओ तेनो यथोचित लाभ ले तो मारा आ प्रयासने हु सफळ थएलो मानीश.

पंडित महाराज श्री उत्तमचद्रजी स्वामीना शब्दोमा ज गुरुस्तुति करीने आ प्रस्तावना पूरी करु छु.

शार्दूल ॥ वदे मद्गुरुवर्गमेनमधुना लाघाजिसज्ञ मुदा।
सद्विद्यार्णवमार्यशीलसरस सौजन्यरत्नाकरम् ॥
यत्पादार्चनतोजडोप्यलमहो जातोऽस्मि विद्या वुधो ।
तत्तु शक्तियरोहमुत्तमपुरश्चद्राभिधानो मुनिः ॥

भैरोंदान जेठमल.

बीकानेर
१९८०

# स्व मुनि महाराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीनो जीवनपरिचय.

॥ शार्दूल ॥

उत्कृष्ट विमल त्रिकालविषय ज्ञान यदीयं स्फुट ।
तत्त्वव्यासवचो विबाधरहितः ख्यातो यदीयागमः ॥
म याऽगम्यगतिर्गरिष्ठमहिमा व्याप्तोहि लोकत्रये ।
चन्द्रौऽज्वलयवरिष्ठशासनपतिर्नस्यात्स भद्रकरः ॥

स्व. मुनि महाराज श्री उत्तमचद्रजी स्वामीए 'प्रकरण संग्रह' ना प्रथम भागमां जे स्तुतिनो श्लोक रचीने अंतर्लापिकामां पोताना नामनो रचना करी हती, ते ज श्लोकवडे प्रभुस्तुति करीने तेमनो संक्षिप्त जीवन-परिचय अत्र आलेखु छु.

## कुटुंबपरिचय.

श्री उत्तमचंद्रजीना पिता श्री जगजीवन रघनाथ न्याते भावसार सुरतमां सगरामपुरामां मुठोया कुवा पासेना चोगानमां रहेता. श्री उत्तमचद्रजीनो जन्म विक्रम संवत् १९१० मां थयो हतो. तेमनी मातानुं नाम दिवाळीबाई हतु. बाल्यावस्थामा गुजराती सात धोरण अने अंग्रेजी पांच धोरणनो अभ्यास तेमणे कर्यो हतो. तेमना पिता रंगारानो धंधो

करता हता, परंतु श्री उत्तमचंद्रजी तो विद्याभ्यासमांथी निवृत्त थईने महेतागीरीनी नोकरीमां जोडाई गया हता. हमे-शनो ऋजु स्वभाव अने हृदयनी सरलता तेमने साधुसमागममां प्रेरती अने तेथी साधुओनो परिचय तेमने हमेशा वधारवानुं ज गमतुं तेमने बे बहेनो हती जेमना नाम माणेकबाई तथा नंदकोरबाई हता. बेउ ब्हेन तेमना लग्न थया बाद गुजरी गया हतां तेमना एक मोटा भाई कालीदास तो केवळ नानी वयमां गुजरी गया हता तेमना पिताजी संवत् १९२३ मां गुजरी गया, जे वखते श्री उत्तमचंद्रजीनी वय मात्र १३ वर्षनी हती

## साधुत्व.

साधुसमागमनी विशेपताथी श्री उत्तमचंद्रजीना ऋजु स्वभावमां वैराग्यनां बीज ववावां हतां, ते बीजना अंकुरो संवत् १९२८ मां फूट्या. ते वखते तेमना मातुश्री वृद्ध हता तथापि धर्मपरायण अने पुत्रना कल्याणनी इच्छावाळा होवाथी विघ्न न पाडतां दीक्षा लेवाने आज्ञा आपी तेथी पूज्य श्री लाधाजी स्वामी पासे ए वर्षना चैत्र मासनी अष्टमी ने मंगळवार श्री उत्तमचंद्रजीए सुरतमां पोताना फोईना दिकरा दलीचंद माणेकचंदने घेरथी दीक्षा ग्रहण करी. ए दीक्षामहोत्सव वखते सुरतमां सारो उत्साह व्याप्यो हतो अने मुंबई, कठोर वगेरे गामना संघो सुरतमां आव्या हता. उत्सवभेर सारा जमणवारो पण थया हता श्री. उत्तमचंद्रजीनो दीक्षातिथि–चैत्र सुद ८–नी पाखी पाळवानो ठराव ते वखते ज भावसारज्ञातिमां थयो हतो जे अत्यारसुधी पळाय छे एवुं जाणवामां आव्युं छे. दीक्षा पछीनुं पहेलुं ज चातुर्मास श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए पोताना गुरुमहाराज श्री लाधाजी स्वामीनी साथे सुरत पासेना कठोर गाममां कर्युं.

## अभ्यास.

दीक्षा ग्रहण कर्या पछी श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए सूत्रज्ञान, तेमज संस्कृत भाषाना अभ्यासनो प्रारंभ कर्यो. व्याकरण, काव्य, अलंकार न्याय आदिनो तेमनो अभ्यास सारो हतो अने तेथी तेमां पारंगत थया पछी संस्कृत भाषामां श्लोको तथा गद्य विवरणो लखवामां ते बहु उत्साह दाखवता. आ प्रकारनुं तेमनुं लेखन केवळ प्रकीर्ण हतुं. थोडुं अंग्रेजी तथा उर्दू भाषानुं ज्ञान पण तेमणे प्राप्त कर्युं हतुं. केटलांक सूत्रो तेमणे मुखपाठ कर्यां हतां. तेमनी उत्तर अवस्थामां केटलाक नवदीक्षित साधुओ सूत्रज्ञान तेमनी पासेथी पण ग्रहण करता. जैनेतर मतमतांतरोनो अभ्यास पण तेमणे सारो कर्यो हतो एम तेमना केटलाक प्रकीर्ण लेखो उपरथी आजे मालूम पडे छे. पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज ज्यारे काठीयावाडमां पहेली ज वार विहार कर्यो हतो, त्यारे श्री. उत्तमचंद्रजी महाराज तेमना परिचयमां आव्या हता. तेमना सूत्रज्ञानना संबंधमां पूज्यश्री श्रीलालजी महाराज जणावता के तेमनुं सूत्रज्ञान उत्तम प्रकारनुं हतुं अने केटलीक बाबतोना सूत्र संबंधी खुलासा तेमने श्री उत्तमचंद्रजी महाराज पासेथी मेळवीने संतोष थयो हतो. तेमना ए ज्ञाननी पूज्यश्री श्रीलालजी महाराज अनेक प्रसंगे प्रशंसा पण करता

## लेखनप्रवृत्ति.

लेखनप्रवृत्ति तेमने अत्यंत रुचिकर जणाती हती. ज्यारे ज्यारे समय मळे त्यारे त्यारे ते कांईक ने कांईक लखवानुं काम करता. तेमना प्रसिद्ध थएला ग्रंथोमां प्रकरण संग्रहना बे विभागो सिवाय बीजुं कांई नथी परन्तु तेमनां लखाणोनो अप्रसिद्ध संग्रह मोटो छे. केटलाक नाना मोटा ग्रंथो जेवा के ज्योतिष करंडक पइन्नानुं गुजराती

भाषांतर, तेरापंथी चर्चा (संस्कृत श्लोकोमां), चार छेदसूत्रोनां गुजराती भाषांतर, इत्यादि तेमणे पूरां लखेलां छे, ते उपरांत सूत्रोमाथी करवामा आवेलां कटलाक दोहन, शकासमाधानो, प्रकीर्ण उतारा, नवा रचेला केटलाक प्रकीर्ण संस्कृत श्लोको इत्यादि संग्रह अव्यवस्थित स्थितिमा पडेलो छे. आ संग्रहने तपासीने, अने विषयवार वर्गगा करीने जो व्यवस्थित करवामा आवे तो तेमांथी केटलाक मोटा ग्रथो बने तेवो संभव छे लेखनप्रवृत्तिना तीव्र उत्साहने लीधे तेमणे जे काई लख्यु छे तेमानु घणुंखरुं कागळना नाना-मोटा गमे तेवा टुकडाओ उपर लखेलु छे लखवानो उत्साह स्फुरे ते वखते पोतानी निकटमां नानो कागळनो टुकडो होय, किंवा एक बाजुए छापेलु अने बीजी बाजुए कोरु कोई हेन्डबील होय अथवातो पाना आकारना कोई सारो जातना कागळोना कटका पडेला होय तो जेवो मळ्यो तेवो कागळ लईने लखवा बेसी जवु एवो तेमनो नियम हतो. आ ज कारणथी तेमना प्रकीर्ण लेखोनो संग्रह कोई विचित्र प्रकारनो पत्रसमुदाय होय एवु जणाय छे. आ संग्रहमानो साथो वधारे उपयोगी भाग चुटी काढीने प्रसिद्ध करवामा आवे तो घणा मुमुक्षुओने लाभ थवा पामे एवो संभव छे

## चातुर्मासो.

महाराज श्री उत्तमचद्रजी स्वामीए स. १९२८ मा दीक्षा ग्रहण करीने ते वर्षे कठोरमां पूज्य श्री लाधाजी स्वामीनो साथे ज चातुर्मास कर्युं. बीजुं स. १९२९ नु चातुर्मास तेमणे पोताना गुरुवर्यनो साथे लींबडीमा कर्युं. त्यार-पछी १९३० मा मोरबी, १९३१ मा धोराजी, १९३२ मा अमदावाद, १९३३ मा भुज (कच्छ), १९३४ मां मुद्रा

(कच्छ), १९३५ मा अमदावाद, १९३६ मां सुरत, १९३७ मां जेतपुर, १९३८मां लींवडी, १९३९ मां जामनगर, १९४० मा वाकानेर, १९४१ तथा ४२ मां सुरत, १९४३ मा अमदावाद, १९४४ मा मांडवी (कच्छ), १९४५ मां मुद्रा, १९४६ मा रापर (कच्छ–वागड), १९४७ मा सुरत, १९४८ मां जेतपुर, १९४९ मां अंजार (कच्छ), १९५० मां मुद्रा, १९५१ मा वढवाण शहर, १९५२ मा लींवडी, १९५३ मां मोरवी, १९५४ मां सायला, १९५५ मां अंजार (कच्छ), १९५६ मां मांडवी (कच्छ), १९५७ मां मोरवी, १९५८ मा गुदाला (कच्छ), १९५९ मां वढवाण कम्प, १९६० मां सुरत, १९६१ मा मुवई, १९६२ मा लींवडी, १९६३ मां अमदावाद, १९६४ मां लींवडी, १९६५ मा वढवाण कॅम्प, १९६६ मा वढवाण शहेर, १९६७ मां लींवडी, १९६८ मां जेतपुर, १९६९ मां माडवी (कच्छ), १९७० मा गुदाला (कच्छ), १९७१ मा रापर (कच्छ–वागड), १९७२ मां मोरवी, १९७३ मां सुरत, १९७४ मा जामनगर अने छेल्लु १९७५ नी सालनुं चातुर्मास अमदावादमां कर्युं. सवत् १९७६ नु चातुर्मास करवा जामनगर जता हता, त्यां रस्तामा राजकोट मुकामे तेमने लकवानु दर्द लागु पड्यु हतु पण तेनी वहु असर न्होती जेथी उपचार करता उपरथी आराम जणायो हतो. तेथी राजकोटथी विहार करी जामनगर चोमासु पहोंच्या. चोमासु सारी रीते पसार थयुं. जोके दर्दनी अदरखाने असर; हती तेथी अशक्ति वधती जती हती तोपण पोते उत्साही हिम्मतवान् अने धैर्यवलवाळा हता तेथी शारीरिक अशक्ति जणावा न देतां चोमासु उतर्ये तुरत जामनगरथी विहार करी लींवडी पहोंच्या. लींवडीना श्रावकोए शरीरनी अशक्ति जाणी लींवडी रोकाना घणो आग्रह कर्यो पण पोताना जन्मदेश–गुजरात तरफ एक वखत चोमासुं करी आववानी तेमने उमेद हती तेथी

अमदावादनुं चोमासुं ठराव्युं. लींबडीथी विहार करी अमदावाद आवतां रस्तामां फरी ते दर्दनो हुमलो थयो अने गामडाना विहारमां हरकत आववा मांडी तोपण मनोबळने परिणामे चोरवडोदरासुधी पहोंच्या. त्यां थोडो वखत रोकाई सारवारपूर्वक उपचार करता कंई ठीक थयुं एटले अमदावाद पहोंच्या. लकवानी असर मगज उपर उतरी. डोकटर जीवराजभाई तथा केशवलालभाई वगेरे रूरी लागणीथी उपचार करता हता पण एकंदर रीते दर्द वधवा मांड्युं. तेमना एक शिष्य भाईचंद्रजी मुनि अने बीजा त्रण साधुओ तेमनी सारवार करवामां सारी महेनत लेता हता. तेमना एक शिष्य खुशालचंद्रजी मुनि कठोर चोमासुं हता. तेमने मांदगी वधवाना खबर मळता महाराज श्री शिवजी स्वामीनी साथे लांबा लांबा विहार करी थोडा दिवसमां कठोरथी अमदावाद आवी पहोंच्या अने थोडा दिवस गुरुसेवानो लाभ लीधो. केटलाएक चिह्नो उपरथी प. श्री उत्तमचंद्रजी महाराजने जणायुं के हवे आ मांदगी मटवाना नथी एटले पोते आहार पाणी तजी संथारानो विचार जणाव्यो. तेवा खबर लींबडी वगेरे स्थळ पहोंचता केटलाक भाविक श्रावको कठोर सुरत लींबडी वगेरे स्थळेथी आवी पहोंच्या हता अने केटलाक तेमनी सारवार माटे खास रोकाया हता छेवट आलोवी पडिक्कमी मत्यारो करी तेओश्री आसो वद ११ ने रविवारे परोढमां वे वागते ४८ वर्ष संयम पाळी एकंदर ६६ वर्षनुं आयुष्य भोगवी काळधर्मने पाम्या.

गुणमीमांसा.

महाराज श्री उत्तमचंद्रजी अत्यंत दयाळु, सरल दिलना अने ज्ञानभारथी नम्र बनी गएला हृदयना पापभीरु साधुवर्य हता तेमना जीवनना परिचयीने कोई ने कोई प्रसंगे तेमना ए गुणोनो आपोआप अनुभव थयाविना रहेतो नहि.

लींबडी समदायना वधां साधु-साध्वी तेमनाथी मोटां होय के नानां तथापि पूर्ण मानवृत्तिथी तेमने जोता. तेमना समागममां रही अभ्यास करवानु घणा साधुओने गमतु कारणके तेमनी शिक्षणपद्धतिमां पारावार भरेलो प्रेम माळूम पडतो. अन्य समदायना साधुओ पण तेमनी साथे रहीने ज्ञानप्राप्ति करवाने हमेशां उत्सुक रहेता. तेमने एकंदरे ४ शिष्यो थया हता. तेमांना खेतशी तथा ताराचंदजी संप्रदायनी मर्यादामां रहीने वर्तवामां शिथिल माळूम पड्या हता. महाराजश्रीए तेमने केटलीक वार शिखामणो आपी वार्या हता, परन्तु ए सरल दिलना गुरुवर्यनी परवा नहि करनार शिष्योने छेवटे गुरुवर्ये पोते ज साधुवेश उतरावीने रजा आपी दीधी हती. त्रीजा शिष्य खुशालचद्रजी हाल विद्यमान छे. चोथा शिष्य भाईचद्रजीए वननिवास स्वीकार्यो छे. तेओश्री एकाकीपणे पर्वतोनी कंदराओमां वसे छे अने शांतियुक्त स्थानोमां यथेच्छ पर्यटन करी काळनिर्गमन करे छे.

## शास्त्रीय ज्ञान.

पंडित श्री उत्तमचद्रजी महाराजनुं शास्त्रीय ज्ञान अत्युत्तम हतुं. जैन आगमोनो भाव तो तेमना मगजमां शृंखलाबद्ध गोठवाई रह्यो हतो, तेनु कारण ए के एक एक आगम केटलीए वार तेमना वांचवामां आवतो. ते उद्यमी एटला बधा हता के नवरा बेसवुं तो तमने गमतु ज न्होतु. कोई वांचनार होय तो तेने वचावता अने ते न होय तो पोते वांच्या करता. टीकाओ वांचवानो तेमने बहु शोख हतो. ते वांचता विचारता अने उपयोगी भाग लखी लेता. लिंबडी संप्रदायमा तेमना समयमां तेमनी व्याख्यानशैली शास्त्रीय ज्ञानथी भूषित सरल होवाने लीधे बहु वखणाती हती. घणां साधुसाध्वीओ पण तेमनु व्याख्यान सांभळवाने उत्सुक रहेता हता. शास्त्रोक्त भांगा संबंधीनु गणितज्ञान पण तेमनामां उच्च

प्रकारनु हतुं प. श्री रत्नचद्रजी महाराज अने तेमना शिष्य खुशालचंद्रजी मुनिने गणीयाना भागा तेमणे ज शीखव्या हता के जे थोडा वखतमा पुस्तक रूपे बहार पाडवामा आवनार छे

चर्चाशक्ति.

शास्त्र संबंधी चर्चा करवामा तेओश्री घणा निपुण हता. तेमा पण खुबी ए हती के स्हामो माणस गमे तेवा आडा अवळा पोईंट उपर जाय तोपण पोते तपी जता नहि किन्तु मगजने शात राखी शातिथी समजावता. तेमनी चर्चा मरचाथी भरेली नही पण साकर जेवी मधुर जणाती हती. घणी वार तेमनी चर्चा ज्ञानगोष्ठीरूप ज थती हती अने श्रोताओने तेमाथी अपूर्व ज्ञानानद मळतो हतो. सवत् १९४५ नी सालमा तेओश्री कच्छ मुद्रामां बीराजता हता त्यारे कच्छ कोडायना रहीश प्रोफेसर रवजी देवराज साथे तेमने मूर्ति सबधी चर्चा थई हती. दररोज त्रणथी चार कलाक शास्त्रीय युक्ति अने दाखला साथे सवाल जवाब थता त्रण दिवस सुधी मधुर चर्चा तेमणे चलावी हती. तेथी प्रो रवजी देवराजभाईने घणो सतोष थयो हतो अने तेमना ज्ञाननो तारीफ करी हती.

सवत् १९४३ नी सालमा तेओश्री रापर चोमासु रहा हता, त्यार रापरना रहीश भोटा जेचंद करमचद के जे एक तेरा पथना चुस्त श्रावक हता अने जेमणे जैन सूत्रोनो बहु सारो परिचय करेल हतो. तेनी साथे तेरापथीनी मान्यता संबधी चर्चा चाली. दररोज रात्रे बबे कलाक विचारणीय मुद्दा उपर चर्चा चालता चार महिना नीकळी गया. छेवट चोमासानी आखरे चर्चाने परिणामे जेचदभाई समज्या, अने तेरापथीनी मान्यता विपरीत छे एम

कबुल करी तेरापंथीनी श्रद्धा तजी तेमणे शुद्ध श्रद्धा धारण करी. आ प्रसंगना परिचयथी पंडितश्रीए तेरापंथीनो चर्चा संबंधी एक नानु सरखु पुस्तक संस्कृत श्लोक रूपे तैयार करेल छे.

स्मारक.

महाराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीनी वय अवसान समये ६६ वर्षनी हती. तेमनो निर्वाण महोत्सव अमदावादना छ कोटी तथा आठ कोटी समुदायना सर्व श्रावकसमुदाये सुंदर रीते उजव्यो हतो. तेमनी पाछळ रु. ५००० जेटलो धर्मादो ए बेउ समुदायोना श्रावको तरफथी थवा पाम्यो हतो अने ए रकमना व्याजमाथी 'साधुशाळा' स्थापवानो तथा तेने अभावे 'श्राविकाशाळा' स्थापवानो ठराव थयो हतो. संवत १९८० मां प. मुनि महाराज श्री गुलाबचंद्रजी स्वामी, श्री वीरजी स्वामी, प. मु. श्री रत्नचंद्रजी स्वामी, श्री रुपचंद्रजी तथा स्व. महाराजश्री उत्तमचंद्रजी स्वामीना विनीत शिष्य श्री खुशालचंद्रजी स्वामीनुं चातुर्मास अमदावादमा थतां आ श्राविकाशाळानो प्रारंभ करवामा आव्यो छे अने बधा समुदायोनी श्राविकाओ तेनो लाभ लई शके छे. धार्मिक शिक्षण अने ते हेतुपूरतु लेखन वाचननुं ज्ञान आपवानो प्रबंध ए श्राविकाशाळामा करवामां आव्यो छे.

चुनीलाल वर्धमान शाह.

# अनुक्रमणिका

## शुद्धिपत्र.

| पत्रांक | पृष्टांक | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| ३ | २ | १२ | उत्मह | उत्साह |
| ६ | २ | ११ | १९४३ | १९४६ |
| ३ | २ | ८-९ | जीव समुदाय मळ्याथी लागती क्रिया ते | पोतानी जीव रुप वस्तुना यथार्थ ज्ञाण यथाथी हर्ष पामे ते |
| ३ | २ | ९-१० | अजीव समुदाय रथादि मेळवयाथी | पोताना अजीव समुदाय रथादिना ज्ञाण यथाथी |
| ६ | २ | ७ | १८ लाख पंचेंद्रियनी योनीमा दर्शन २-३-४ लाभे | ४ लाख तिर्यंच पंचेंद्रियनी योनीमा दर्शन २-३ अने १४ लाख मनुष्यनी |
| ७ | १ | ३ | २२ | ५२ |
| ७ | १ | १२ | ६ | ४-६ |
| ८ | १ | १२ | ७० | ५८ |
| ८ | २ | १ | १५ | २६ |
| ८ | २ | १ | भाव ५ | भाव ३-४ ५ |

| पत्रांक | पृष्टांक | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| ८ | २ | ५ | (अशुद्ध) नारकी देवनी ८ लाख योनीमा २५ कषाय, ११ जोग, १२ अव्रत, ५ मिथ्यात्व, एम ५३ हेतु लाभे | (शुद्ध) नारकीनी ४ लाख योनीमा २३ कषाय, ११ जोग, १२ अव्रत, ५ मिथ्यात्व, ए ५१ हेतु लाभे देवतानी ४ लाख योनीमा २४ कषाय, ११ जोग, १२ अव्रत, ५ मिथ्यात्व, ए ५२ हेतु लाभे |
| ८ | २ | १० | ५३ | ५३॥ |
| १० | २ | ११ | सोल | बार |
| १० | २ | ११ | आठ—आठ | छ—छ |
| १० | २ | १२ | बे आंगलनी | बे पलनी |
| ११ | १ | १ | चार आंगलनी | सात आंगलनी |
| १२ | १ | १०-११ | शेर १० | शेर ८ |
| १४ | २ | ३ | सूक्ष्म केटला? बादर केटला? | संज्ञी केटला? ने असंज्ञी केटला? |
| १६ | १ | १ | असंख्यातगुणा | अनंतगुणा |
| १८ | १ | १० | फळ | काल |
| १८ | २ | ३ | मरुदेवा मातानी अपेक्षाए | ० |
| २० | २ | १० | ए | ए १३२ ने |
| २३ | २ | ३ | वायु | तेउ |

| पत्रांक | पृष्ठांक | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| २३ | १ | ६ | (अशुद्ध) २१९-वैक्रेय मिश्रयोगनी माफक जाणवुं (शुद्ध) ११३-७ नरक, १ बादर वायरो ५ असंज्ञीतिर्यंच, १५ कर्मभूमि, ग्रैवेयक अनुत्तर विमान वर्जी ८५ देवता, ए सर्वना पर्याप्तामां लाभे | |
| २५ | २ | १० | ६ | ७ |
| २५ | २ | ११ | ४-६- | ५-७ |
| ४० | २ | १२ | तेडाथी जाय | स्पर्श विषय |
| ४१ | १ | १ | स्पर्श भोग | रूप विषय |
| ,, | ,, | ,, | रूपभोग | शब्दविषय |
| ,, | ,, | ,, | शब्दभाग | ० |
| ४१ | १ | २ | नजरमेळानो भोग | मानसिक भोग |
| ४७ | १ | ८ | संख्यातानु | असंख्यातानु |
| ६८ | १ | ६ | द्रीप | द्वीप |
| ६९ | १ | १२ | दाम | रोम |
| ७८ | २ | ९ | सचिटणा | संचिठणा |
| ८८ | १ | १२ | आद्य | ओर्छु |
| ९९ | १ | ४ | याल | वाल्याग्र |
| ९९ | २ | ६ | तजस् | तैजस |
| १०१ | २ | ८ | पयु | पय |
| १०२ | १ | १ | ने | ते |
| १०६ | २ | २ | वानी माठेरी | वा माठेरीनी |

| पत्रांक | पृष्ठांक | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| १०७ | २ | ८ | द्वीपमवेशी | द्विप्रदेशी |
| १०९ | १ | ८ | आत्मम | गाउ |
| ११० | २ | ५ | विपुलमतिथी | विपुलमति पणी |
| ११७ | २ | ९ | ४३ | ३४ |
| ११८ | २ | ९ | तण | जेण |
| १२२ | २ | ८ | २१५ | २१८ |
| १२४ | १ | ८ | पम मली ५२ दंडक थया | पम ५२ दंडक थया, सर्व मली १०२ दंडक जाणवा |
| १२५ | २ | ३ | २२-२२ | २१-२१ |
| १२५ | २ | ४ | २२-४८ | २१-४२ |
| १२७ | २ | १२ | ३२ | ३२ |
| १२८ | १ | ६ | १४० | १४८ |
| १२९ | १ | ४ | २-८४ | ..१० |
| १३० | १ | ८ | - एकेंद्रिय | - एकेन्द्रिय |
| १३० | १ | ११ | न | ने |
| १३६ | २ | २ | राम | रहा |
| १३६ | २ | ८ | पाल | पोत |
| १३७ | २ | ६ | व्यक्तयता | वक्तव्यता |
| १४५ | १ | ५ | तजु | तेजु |
| १५२ | २ | ६ | गण | वर्ण |
| १६० | २ | २ | वधारी | वधनी ज० |

# विशेष शुद्धि

| पत्राङ्क | पृष्ठाङ्क | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| ६ | १ | १० | (अशुद्ध) १८ लाख योनिमा १६ तथा ८ कषाय लाभे (शुद्ध) ५८ लाख योनिमा १६ कषाय लाभे, ८ लाख योनिमा १६ तथा १२ कषाय लाभे, ४ लाख योनिमा १६-१२-८ कषाय लाभे. | |
| ६ | २ | ३ | (अशुद्ध) १८ लाख पंचेंद्रियनी योनिमा २-३-४-५ ज्ञान लाभे. (शुद्ध) ४ लाख योनिमा २-३ ज्ञान लाभे, १४ लाख योनिमा २-३-४-५ ज्ञान लाभे. | |
| ८ | १ | ११ | (अशुद्ध) ६ लाख विकलेंद्रियनी योनिमा २ तथा ३ क्रियावादी वध्या (शुद्ध) अज्ञानवादी १ अक्रियावादी २ ए बे समवसरण लाभे | |
| ८ | २ | २ | ४१ हेतु | ३९ हेतु |
| ८ | २ | २ | २५ | २३ |
| ८ | २ | ४ | ४३ | ४१ |
| ८ | २ | ४ | २५ | २३ |
| ८ | २ | ५ | ४२ | ४० |
| ८ | २ | [illegible] | (अशुद्ध) [illegible] (शुद्ध) स्थावर नाडीमा १५० पैकी लइये ता २२ पंचेंद्रियमांथी १ तेउकायनो भेद वर्जी २१ पंचेंद्रियना भेद लाभे, पण मूळ भेदनी | |
| [illegible] | २ | ११ | मायाना | मायानो |
| ३२ | १ | ११ | (अशुद्ध) तिर्यंच अने मनुष्य ज्यां ज्यां जाय त्यां त्यां ज० उ० प्रथम पांचे लेश्यानी अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति जाणवी केवल ज्ञान आश्री शुक्ल लेश्यानी स्थिति (शुद्ध) तिर्यंच आश्री छ लेश्या अने मनुष्य आश्री प्रथम पांच लेश्यानी स्थिति ज० उ० अंतर्मुहूर्त्तनी। शुक्ल लेश्यानी स्थिति छद्मस्थ मनुष्य आश्री ज० उ० अंतर्मु०नी अने केवली आश्री | |
| ३२ | २ | ७ | (अशुद्ध) ज्योतिषी (शुद्ध) ज्योतिषी आश्री तेजु लेश्यानी ज० स्थिति पल्यना आठमा भागनी अने उ० १ पल्य ने १ लाख वर्षनी. | |
| ४१ | १ | ११ | १७॥ | १७ |
| ४५ | १ | १० | आउबल | आउबहुल |
| ४५ | १ | ११ | पकबल | पकबहुल |
| ४९ | १ | ५ | जंबूद्वीप पालखी एक चपटीमांहि २१ फेरा देई | ० |
| ५२ | २ | ३ | कालोदधि | कालोदधि समुद्रना पाणी सरिखा |
| ५२ | २ | ३ | त्रण | बे |
| ५४ | २ | ५ | पांचमी | ० |

| पत्राक | पृष्ठाक | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| ५४ | २ | ७ | यादला मस्थान | यादला अर्द्ध कपित्थ मस्थान |
| ५५ | १ | १ | २६०० योजन | ९७०० योजन |
| ५५ | १ | १ | ९५०० , | २६०० ,, |
| ५५ | १ | २ | २४०० , | २५०० , सातमा आठमा देवलोकना २४०० योजनना |
| ५५ | १ | ११ | अर्द्धचंद्राकार | त्रिकोण सिंघाडाकार |
| ५६ | २ | ५ | १ | १॥ |
| ५६ | २ | ६ | २ | २॥ |
| ५६ | २ | ६ | ३ | ३॥ |
| ५९ | २ | १ | (अशुद्ध) पहेले समये १०८ मोक्ष | |

जाय (शुद्ध) १ थी ३२ पर्यंत मोक्ष जाय तो ८ समय
सुधिमा ॥१॥ ३३ थी ४८ मोक्ष जाय तो ७ समय
सुधिमा ॥२॥ ४९ थी ६० मोक्ष जाय तो ६ समय
सुधिमा ॥३॥ ६१ थी ७२ मोक्ष जाय तो ५ समय
सुधिमा ॥४॥ ७३ थी ८४ मोक्ष जाय तो ४ समय
सुधिमा ॥५॥ ८५ थी ९६ मोक्ष जाय तो ३ समय
सुधिमा ॥६॥ ९७ थी १०२ मोक्ष जाय तो २ समय

पत्राक पृष्ठाक पंक्ति अशुद्ध शुद्ध
सुधिमा ॥७॥ १०३ थी १०८ मोक्ष जाय तो १ समय
सुधिमा ॥ ८ ॥

| पत्राक | पृष्ठाक | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| ६१ | २ | ८ | असंखेज्जगुणा | संखेज्जगुणा |
| ६३ | १ | ११ | पज्जत्ता | बादर पज्जत्ता |
| ८४ | १ | ५ | न० | न० २ |
| ८५ | १ | ८ | एकेंद्रिय | वायुकाय एकेंद्रिय |
| ८५ | १ | ९ | नोएकेंद्रिय | नोवाउकाय |
| ८५ | १ | ९ | नोएकेंद्रिय | नोवाउकाय |
| ८५ | १ | ९ | एकेंद्रिय | वाउकाय एकेंद्रिय |
| ८५ | १ | १३ | पमज | अ० अतमुहुर्त्तनु उ० पमज ॥ |
| ८७ | १ | ५ | ५ \| २५<br>५ \| १२५<br>५ \| ६२५<br>५ \| ३१२५ | ५×५= २५<br>२५×५= १२५<br>१२५×५= ६२५<br>६२५×५=३१२५ |
| ११९ | २ | ५ | नोअसंयत | नोअसंयत नोसंयतासंयत |
| १२५ | २ | २ | अचरमपणु | चरमाचरमपणु |
| १२५ | २ | ५ | आहारकपणु | अनाहारकपणु |
| १५५ | २ | १ | वाल | वोल |

# श्री प्रकरण संग्रह.

## भाग बीजो.

### प्रारंभ.

खड्ग, मुष्ट्यादिनुं नीपजाववुं ते निवर्तनाधिकरणिका ॥ ३ ॥ प्रद्वेषे ( मत्सरे ) करी नीपजी ते पाउसिया–प्राद्वेषिकी तेना वे भेद–१ जीवने विषे द्वेष करवाथी निपनी ते जीवप्राद्वेषिकी, २ अजीव (स्तनादि) ने विषे द्वेष करवाथी निपनी ते अजीवप्राद्वेषिकी ॥ ४ ॥ परितापना ( ताडनादि ) दुःख विशेषे करी निपनी ते पारितावणिया–पारितापनिका तेना वे भेद–१ पोताने हाथे करी परितापना उपजावे ते स्वहस्तपारितापनिका, २ बीजाने हाथे परितापना उपजाववे करी निपनी ते परहस्तपारितापनिका ॥ ५ ॥ प्राण (आयुष्यादि १० ) नो अतिपात–नाश करवे करी निपनी ते प्राणातिपात क्रिया तेना वे भेद–१ पोताने हाथे करी कोइ प्राणीने प्राणथी वेगळो करे ते स्वहस्तप्राणातिपात क्रिया, २ बीजाने हाथे कोइने प्राणथी वेगळो करावता लागे ते परहस्तप्राणातिपात क्रिया ॥ ६ ॥ आरम्भ ( उपद्रव ) करवाथी निपनी ते आरम्भिका तेना वे भेद–१ जीवने उपद्रव करवाथी लागे ते जीवआरम्भिका, २ अजीव ( जीवना कलेवर अथवा वस्त्रादि ) नो आरम्भ–अग्निसंस्कार वगेरे करता जे क्रिया लागे ते अजीवआरम्भिका ॥ ७ ॥ परिग्रह नव

प्रकारनो, ने उपर मूर्च्छा राखवाथी लागे ते परिग्गहिया क्रिया तेना बे भेद–१ जीव (मनुष्यादि) ने विषे मूर्च्छा राखवाथी लागे ते जीवपरिग्गहिया, २ अजीव (सुवर्णादि) ने विषे मूर्च्छा राखवाथी लागे ते अजीव परिग्गहिया ॥ ८ ॥ माया–कपट निमित्तथी जे क्रिया लागे ते मायावत्तिया. तेना बे भेद–१ हृदयना दुष्ट आशयने वक्रतारूपे बीजी रीते बतावबानी कोशीश करवी ते आयभाववंकणया, २ खोटा लेखादिके करी परने वचवानो व्यापार ते परभाववंकणया ॥ ९ ॥ अविरति निमित्तथी निपनी जे क्रिया ते अपच्चखाण क्रिया. तेना बे भेद–१ जीवने विषे प्रत्याख्यान कर्या विना जे वधादि व्यापार ते जीव अपच्चखाण क्रिया, २ मद्यादि अजीवने विषे पच्चखाण न करवाथी कर्मबंध थाय ते अजीव अपच्चखाण क्रिया ॥ १० ॥ मिथ्यात्व निमित्ते कर्मबंध व्यापार थाय ते मिच्छादंसणवत्तिया. तेना बे भेद–१ हीन–अधिक आत्मादि वस्तु विषय मिथ्यात्वदर्शन निमित्त व्यापार ते ऊणातिरिक्तमिच्छादंसणवत्तिया, २ पूर्वोक्त ऊणातिरिक्त मिथ्यादर्शनथी भिन्न मिथ्यादर्शन जेमके आत्मा नथी, इत्यादिरूप मिथ्यादर्शन व्यापार ते तद्व्यति-

रिक्तमिछादसणवत्तिया ॥ ११ ॥ वस्तुना देखवाथी निपनी ते दिट्ठिया तेना वे भेद–१ जीवता हाथी घोमा प्रमुखने देखवाथी जे कर्म लागे ते जीवदिट्ठिया, २ चित्रामण प्रमुख जोवाथी जे कर्म लागे ते अजीवदिट्ठिया ॥ १२ ॥ वस्तुने स्पर्शवाथी निपनी ते पुट्ठिया तेना वे भेद–१ जीवने रागरूपे स्पर्शवाथी जे कर्म लागे ते जीवपुट्ठिया, २ अजीवने रागरूपे स्पर्शवाथी जे कर्म लागे ते अजीवपुट्ठिया ॥ १३ ॥ बाह्य वस्तुनु माठु चितववाथी निपनी ते पाडुच्चिया तेना वे भेद-१ जीवने आश्रिने राग–द्वेषथी निपनी ते जीवपाडुच्चिया, २ अजीवने आश्रिने राग–द्वेषथी निपनी ते अजीवपाडुच्चिया ॥ १४ ॥ सर्व प्रकारे जनसमूहना मळवाथी निपनी ते सामतोवणिवाइया तेना वे भेद–१ जीव समुदाय मळवाथी लागती क्रिया ते जीवसामतोवणिवाइया, २ अजीव समुदाय रथादि मेळववाथी हर्ष पामे ते अजीवसामतोवणिवाइया ॥ १५ ॥ हाथे करी निपनी ते साहत्थिया तेना वे भेद–१ पोताने हाथे जीवने पकमी हणे ते जीवसाहत्थिया, २ पोताने हाथे (अजीव) खङ्गादिक पकमी जीवने हणे ते अजीवसाहत्थिया ॥ १६ ॥

निसर्जन-फकवाथी निपनी ते नेसत्थिया. तेना बे भेद-१ पथ्थर आदि सजीव
वस्तुनु यन्त्रादिवके फेंकवु ते जीवनेसत्थिया, २ वाणादिनु धनुष्यादिवके फेकवुं
ते अजीवनेसत्थिया ॥ १७ ॥ स्वामीना आदेशथी निपनी ते आणवणिया-आज्ञाप-
निका तेना बे भेद-१ जीवने आणवानो आदेश करवाथी निपनी ते जीवआणवणिया,
२ अजीवने आणवाना आदेश करवाथी निपनी ते अजीवआणवणिया ॥ १८ ॥ विदा-
रवाथी निपनी ते विदारणिका तेना बे भेद-१ जीवने विदारवाथी निपनी ते जीवविदा-
रणिका, २ अजीव (रतन्नकाष्ठादि) ने विदारवाथी निपनी ते अजीवविदारणिका ॥ १९ ॥
अज्ञान निमित्तथी निपनी ते अणाभोगवत्तिया. तेना बे भेद-१ उपयोग विना वस्त्रादि
लेवा ते अनायुक्तआदानता, २ उपयोग विना पात्रादिनु प्रमार्जन करवुं ते अनायुक्तप्र-
मार्जनता ॥ २० ॥ स्वशरीरादिनी अपेक्षा न राखवाथी क्रिया लागे ते अणवकखवत्तिया.
तेना बे भेद १ पोताना शरीरनी क्षति करवाथी लागे ते आत्मशरीरअणवकंखवत्तिया,
२ परना शरीरनी क्षति करवाथी लागे ते परशरीरअणवकखवत्तिया ॥ २१ ॥

प्रेम ( स्नेह ) ना निमित्तथी निपनी ते पेज्जवत्तिया–प्रेमवृत्तिका तेना वे भेद–१ मायाना निमित्तथी निपनी ते मायावृत्तिका, २ लोभना निमित्तथी निपनी ते लोभवृत्तिका ॥ २२ ॥ द्वेष ( क्रोध मान ) ना निमित्तथी निपनी ते दोसवत्तिया-द्वेषवृत्तिका तेना वे भेद–१ क्रोधना निमित्तथी निपनी ते क्रोधवृत्तिका, २ मानना निमित्तथी निपनी ते मानवृत्तिका ॥ २३ ॥ प्रयोगे करी निपनी ते प्रयोगक्रिया तेना त्रण भेद–१ मनना प्रयोगे करी निपनी ते मनप्रयोगक्रिया, २ वचनना प्रयोगे करी निपनी ते वचनप्रयोगक्रिया, ३ कायाना प्रयोगे करी निपनी ते कायप्रयोगक्रिया ॥ २४ ॥ मन आदि प्रयोगे करी ग्रहण करेल कर्मवर्गणानु सम्यक् प्रकारे प्रकृतिवधादि भेदे करी अगीकार करवु ते समुदान क्रिया तेना त्रण भेद–१ आंतरारहित ( प्रथम समयवर्त्तिनी) ते अनतरसमुदान क्रिया–२ द्वितीयादि समयवर्त्तिनी ते परपरसमुदान क्रिया, ३ प्रथम अप्रथम समयनी अपेक्षाए ते तदुभयसमुदान क्रिया ॥ २५ ॥ पथे चालवाथी जे क्रिया लागे ते इर्यापथिका. तेना वे भेद–१ ११ मे तथा १२ मे गुणठाणे यथाख्यात चारित्रवाळाने लागे

ते छद्मस्थइरियावहिया क्रिया, २ केवलीने लागे ते केवलीइरियावहिया क्रिया ॥ एव मूल क्रिया २५ अने उत्तर क्रिया ५२ थइ ॥

॥ इति पचीस क्रियाना बोल सपूर्ण ॥

## योनिना बोल ॥

गाथा ॥ जीव १ इद्रिय २ गुणठाण ३, जोग ४ वेय ५ कसाय ६ लेस्सा ७ ॥
नाण ८ अन्नाण ए दंसण १०, सणि ११ वेयणीय १२ पज्जति १३ ॥ १ ॥
पाण १४ ऊाण १५ उवओग १६, दिठ्ठी १७ अप्पा १८ मरण १ए समुग्घाए २० ॥
सरीर २१ संठाण २२ संघयण २३, वणाइ २४ सएणा २५ समोसरण चेव २६ ॥२॥
नाव २७ हेउ २८ कूल कोमी २ए, पयवी ३० इमाइं तिसदाराइ ॥
चउरासी लख जीवाजोणी, उत्तारेयव्वं तस्सोवरी ॥३॥

२२ लाख योनिमा ३-४ ६ लेश्या लाभे ॥७॥ आठमु ज्ञानद्वार–८४ लाख योनि तेमा
५२ लाख योनिमा ज्ञान लाभे नहि ६ लाख विगलेन्द्रियनी योनिमा २ ज्ञान लाभे ८
लाख नारकी देवनी योनिमा ३ ज्ञान लाभे १८ लाख पचेन्द्रियनी योनिमा २ ३ ४ ५
ज्ञान लाभे ॥८॥ नवमु अज्ञानद्वार–८४ लाख योनिमा अज्ञान ३ लाभे तेमा ५८
लाख योनिमा अज्ञान २ लाभे २६ लाख योनिमा २ तथा ३ अज्ञान लाभे ॥९॥ दसमु
दर्शनद्वार–५६ लाख योनिमा १ अचक्षुदर्शन लाभे २ लाख चउरिन्द्रियमा बे दर्शन
चक्षु, अचक्षु लाभे ८ लाख देवनारकीनी योनिमा ३ दर्शन लाभे १८ लाख पचेन्द्रियनी
योनिमा दर्शन २ ३ ४ लाभे ॥१०॥ अगीआरमु सञ्ज्ञी असञ्ज्ञीद्वार–५८ लाख योनिमा
१ असञ्ज्ञी लाभे २६ लाख योनिमां सञ्ज्ञी असञ्ज्ञी २ लाभे ॥११॥ बारमु वेदना द्वार–
८४ लाख योनिमा निश्चयनये २ वेदना लाभे प्रत्येक प्रत्येकमा व्यवहारनये ४ लाख नार-
कीनी योनिमा १ अशाता वेदनीय लाभे ४ लाख देवतानी योनिमा १ शाता वेदनीय
लाभे शेष ७६ लाख योनिमा २ वेदना लाभे ॥१२॥ तेरमु पर्याप्तिद्वार–८४ लाख जीवा

योनिमा पर्याप्ति ६ लाभे तेमा ५२ लाख एकेन्द्रियनी योनिमा पर्याप्ति ४ लाभे ६ लाख विगलेन्द्रियनी योनिमां पर्याप्ति ५ लाभे. २६ लाख पचेन्द्रियनी योनिमा पर्याप्ति ५६ लाभे ॥१३॥ चौदमु प्राणद्वार–८४ लाख योनिमां प्राण दस लाभे तेमा ५२ लाख एकेन्द्रियनी योनिमा प्राण ४ लाभे. २ लाख बेइन्द्रियनी योनिमा प्राण ६ लाभे २ लाख तेइन्द्रियनी योनिमा प्राण ७ लाभे २ लाख चउरिन्द्रियनी योनिमा प्राण ८ लाभे २६ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां प्राण ९–१० लाभे ॥१४॥ पदरमुं ध्यानद्वार--५८ लाख योनिमा २ ध्यान लाभे ते आर्तध्यान १, रौद्रध्यान २ १२ लाख योनिमा २ ३ ध्यान लाभे ते धर्मध्यान वधुं १४ लाख योनिमां २-३-४ ध्यान लाभे ॥ १५ ॥ सोलमुं उपयोगद्वार–८४ लाख योनि तेमां ५२ लाख योनिमां ३ उपयोग, २ अज्ञान १ अचक्षुए ३ लाभे ४ लाख बेइन्द्रिय तेइन्द्रियनी योनिमा ५ उपयोग लाभे. २ लाख चउरिन्द्रियनी योनिमां ६ उपयोग लाभे, १२ लाख देव नारकी तिर्यचनी योनिमां ९ उपयोग लाभे १४ लाख मनुष्यनी योनिमा उपयोग ६ तथा १२ लाभे ॥ १६ ॥ सत्तरमुं दृष्टिद्वार–५२ लाख

लाभे ते उपशम, क्षायक
लाभे, उदय, क्षयोपशम, परिणामिक १४ लाख योनिमा भाव ५ लाभे ते उपशम, क्षायक
लाभे, उदय, क्षयोपशम, परिणामिक
ए वे वध्या ॥ २७ ॥ अट्ठावीसमु हेतुद्वार–४५ लाख एकेन्द्रियमा ४१ हेतु लाभे २५ कपाय,
३ जोग, १२ अव्रत, १ अनाभोगमिथ्यात्व एम ४१ वाउकायनी ७ लाख योनिमा २ वैक्रे-
यना वधता ४३ हेतु लाभे त्रण विगलेन्द्रियनी छ लाख योनिमा २५ कपाय, ४ जोग, १२
अव्रत, १ अनाभोगमिथ्यात्व एम ४२ हेतु लाभे नारकीदेवनी ८ लाख योनिमा २५ कपाय,
११ जोग, १२ अव्रत, ५ मिथ्यात्व ए ५३ हेतु लाभे. तिर्यचपचेन्द्रियनी ४ लाख योनिमा
५५ हेतु लाभे, ते ५७मायी आहारकना २ वर्ज्या १४ लाख मनुष्यनी योनिमा ५७ हेतु
लाभे ॥ २८ ॥ ओगणत्रीसमु कुलकोटिद्वार–५२ लाख एकेन्द्रियनी योनिमा ५७ लाख
कुलकोटि विगलेंन्द्रियनी ६ लाख योनिमा २४ लाख कुलकोटि देवनारकीनी ८ लाख
योनिमा ५१ लाख कुलकोटि तिर्यच पचेंद्रियनी ४ लाख योनिमा ५३ लाख कुलकोटी
१४ लाख मनुष्यनी योनिमा १२ लाख कुलकोटि ए १९७५०००० लाख थाय कुलकोटि
कहेता कूळना समुदाय जाणवा ॥ २९ ॥ त्रीसमु पदवीद्वार–७ लाख पृथ्वीकायनी योनिमा

७ एकेन्द्रियनी पदवी लाभे शेष ४५ लाख एकेन्द्रियनी योनिमा पदवी एके न लाभे. ६ लाख विगलेन्द्रियनी योनिमां पदवी एक समकीतनी लाभे ८ लाख नारकी तथा देवनी योनिमा १ समदृष्टिनी पदवी लाभे. ४ लाख तिर्यच पंचेन्द्रियनी योनिमा ४ पदवी– अश्व ने गज तथा श्रावक ने समदृष्टिनी लाभे मनुष्यनी १४ लाख योनिमां ५ पंचेन्द्रिय रत्ननी ने ए मोटी पदवी एम १४ पदवी लाभे ॥ ३० ॥

॥ इति योनिना बोल सपूर्णम् ॥

## गर्भावासना बोल ॥

अथ श्री तडुलवेयालिया प्रकीरणकथी संक्षेपे गर्भावासना बोल लिख्यते ॥

स्त्रीनी नाभी नीचे वे नाभी छे, ते फुलनी नालीने आकारे छे तेनी नीचे योनि छे. ते जीवने उपजवानु ठेकाणु छे ते अधोमुख कमळने आकारे छे त्या आंबानी मंजरी

सरखु मास छे ज्यारे स्त्रीने ऋतुकाळ आवे त्यारे मजरी करे जेम रसजर्यु गुमडुं करे तेम ते ऋतुना बिंदु करे त्या वीर्यनो सजोग मिश्र थाय त्यारे बार मुहूर्त्तमा जीव आवी उपजे, उत्कृष्टा नव लाख जीव उपजे स्त्रीनी योनि पचावन वर्ष उपरात मळी जाय–अबीज थाय पुरुष पचोतेर वर्ष पछी अबीज थाय ए नियम सो वर्षना आयुष्यना प्रमाणनो समजवो उपरात पूर्व क्रोड सुधी आयुष्य होय तो स्त्रीना अर्द्ध आयुष्य सुधी सबीज योनि होय पुरुषना सर्व आयुष्यनो वीसमो जाग शेष रहे त्यारे अबीज होय वळी एक पुत्रने नवसे पिता होय नवसे पुरुषनो एक पुत्र ते गर्भ उत्कृष्टो बार वर्ष सुधी माताना उदरमा ठेकपणे रहे पाछो एनो ए जीव पापना उदयथी फरी पाछा बीजा बार वर्ष रहे, एटले चोवीस वर्ष थाय, त्यासुधी रहे जमणे पासे पुत्र रहे डाबे पासे पुत्री रहे वचे नपुसक रहे तिर्यचणीने आठ वर्ष सुधी ठेक रहे मातानुं रुधिर, पिताना शुक्रनो प्रथम आहार ले सात दिवस सुधी चोखाना धोवण सरखो होय बीजा साते पाणीना परपोटा सरखो थाय त्रीजा साते नाकना श्लेषम सरखो थाय चोथा साते

आवानी गोटली सरखो थाय--अथवा खजुरनी पेशी सरखो थाय. ते जीव पहेले मासे अरुतालीस मासाजार थाय बीजे मासे पेशीथी कठण थाय त्रीजे मासे माताने दोहद (इछा) थाय सारो इछा पुण्यवतनी माताने थाय अने खराब इछा पापी जीवनी माताने थाय चोथे मासे मातानु अंग पुष्ट करे पांचमे मासे पेशी थकी पाच अकुरा नीकळे, बे हाथ, बे पग, एक माथु एम पाच छट्ठे मासे पीत्त अने लोही उपजे. सातमे मासे सातसो शीरा--नाडी उपजे पांचसे पेसी ते मांसस्थानक विशेष, नव मोटी नाडी थाय, नवाणु लाख रोम गळा हेठे, बे क्रोड एकावन लाख रोम गळा उपर, सर्व मळी साडी-त्रणक्रोड रोम थाय. आठमे मासे संपूर्ण अंगनी प्राप्ति होय गर्भमांहि जीव उच्चार पासवण खेल संघाण पीत्त शुक्र शोणित एटलां वानां न करे ते केम जे पुफल रसहरणी नाडीये आहारे, ते शरीरना अगोपागपणे, पांच इद्रियपणे, हाड, मींजा, वाळ, मुछ, दाढी, रोम, नखपणे परगमाव्रे. मस्तक अवयवादि पण निपजावे. गर्भमांहि जीवने कवल आहार नहि. माता राजी तो गर्भ राजी. माता दुःखी तो गर्भ दु:खी. मातानी ने गर्भना

जीवनी नाक रसहरणीने वळगी रही ठे जे माता आहार करे ते सर्व गर्जने नाकोनाक प्रगमे, फळना वीटनी परे शरीरने विपे त्रण अग माताना ठे मास १, लोही २, माथानु नेजु ३. त्रण अग पिताना ठे हाक १, हाकनी मींजा २, दाढी, मूठ, रोम, नख, प्रमुख ३ गर्जमाथी जीव मरीने नरकमा जाय तेम देवतामा पण जाय वळी गर्जमाहि माता सुवे तो गर्ज सुवे माता जागे तो गर्ज जागे गर्जावासमाहि अधकार ठे. महा अशूचि डु-र्गंध ठे मल मूत्रनु स्थानक ठे त्या जीव डु खी थतो रहे ठे एम डु ख जोगवतां सवा नव मासे जन्मे जीव अल्प लोही ने घणा शुकनो आहार करे तो पुत्र थाय १, अल्प शुक्र ने घणा लोहीनो आहार करे तो पुत्री थाय २, वे वरोवर आहार करे तो नपुंसक थाय ३ मस्तकेथी जन्म पामे तो सुखेथी जन्मे कोइ पापी जीव आनो यइ आवे तो विनाश पण पामे वळी आ शरीर केवु ठे तो के महा अशुचीनो जकार ठे आ शरीरने विपे अढार पृष्ट करक साधा ठे सोल पासळी करक ठे आठ एक पासे, आठ वीजे पासे. चार आगळनु गळु ठे वे आगळनी आख ठे चार आगळनो नीलाक ठे वत्रीस दात

छे. चार आंगळनी जीव्ह छे. साडात्रण पलनुं हैयु छे पचीस पलनुं काळजु छे बे आंत (कोठा) नानी छे, बे आत मोटी छे मोटी आंतमा वडीनीत प्रणमे छे नानी आंतमां लघुनीत प्रणमे छे बे पासा छे. डाबु ने जमणु पासुं डावे पासे सुखनो परिणाम छे जमणे पासे दुखनो परिणाम छे. आ शरीरने विषे एकसो साठ साधा छे एकसो सीत्तेर मर्मना स्थान छे. त्या घा लागे तो तत्काळ मरण पामे त्रणसो हाडनी मीजा छे. नवसो नाडणी छे सातसो शीरा छे पाचसो पेसी मासस्थानक छे नव नाडी मोटी छे. सातसो नाडीनु विवरण- एकसो साठ नाडी नाभीथी निकली ते उंची चाली मस्तके पहोंची. ते रसहरणी नामथी ओलखाय छे एनी निरुपघाते आख, कान, नाक, जीव्हनु बळ वधे एनी उपघाते आंख, कान, नाक, जीव्हनुं बळ घटे एकसो साठ नाडी नाभिथी उपनी अधोगामिनी पगतळे जइ पहोची. तेनी निरुपघाते नेत्रनु अने जघानुं बळ वधे तेनी उपघाते मस्तके वेदना, शूळादिक उपजे. आखे आंधळो थाय, नेत्रनुं बळ ओछु थाय. एकसो साठ नाडि नाभिथी उपनी त्रीछी जइ हाथे जइ पहोची.

# श्वासोश्वासना बोल ॥

अथ श्री श्वासोश्वासना बोल लिख्यते ॥

सो वर्षनी युग वीस ॥ १ ॥ सो वर्षना सवत्सर सो ॥ २ ॥ सो वर्षना अयन बसो ॥३॥ सो वर्षनी ऋतु उसो ॥ ४ ॥ सो वर्षना मास वारसो ॥ ५ ॥ सो वर्षना पखवाकिया चोवीस सो ॥ ६ ॥ सो वर्षना अठवाकिया अमतालीस सो ॥ ७ ॥ सो वर्षना दिवस उत्रीस हजार ॥ ८ ॥ सो वर्षना पहोर वे लाख ने अट्ठाशी हजार ॥ ९ ॥ सो वर्षना मुहूर्त्त दस लाख ने एंसी हजार ॥ १० ॥ सो वर्षनी घमी एकवीस लाख ने साठ हजार ॥ ११ ॥ सो वर्षना श्वास उश्वास चारसो सात कोम अमतालीस लाख ने चालीस हजार. ते सख्याना अक दस थाय ४०७,४८,४०,००० ॥ १२ ॥ एक घमीना श्वास उश्वास अढारसो ने सामी उयाशो ॥ १३ ॥ एक मुहूर्त्तना श्वास उश्वास सामत्रीस सो ने तोतेर ॥ १४ ॥ एक पहोरना

श्वास उश्वास चौद हजार एकसो ने पोणी ओगणपचास ॥१५॥ एक अहोरात्रिना श्वास
उश्वास एक लाख तेर हजार एकसो ने नेवु ॥१६॥ पंदर दिवसना श्वासोश्वास सोल लाख
सत्ताणुं हजार आठसो ने पचास ॥ १७॥ एक मासना श्वासोश्वास तेत्रीस लाख पचाणु ह-
जार सातसो ॥१८॥ सवानव मासना श्वासोश्वास त्रण क्रोड चउद लाख दस हजार वसो
ने पचीस ॥१९॥ एक वर्षना श्वासोश्वास चार क्रोड सात लाख अडतालीस हजार ने चा-
रसो ॥२०॥ ब्रह्मदत्त नामे बारमो चक्री मरीने सातमी नरके उपन्यो. त्यां तेत्रीस साग-
रनु आयुष्य छे. ते इहां मनुष्यपणे एकेक श्वासोश्वासने सुखे त्यां नरकमा केटलो काल
दुःख जोगवशे ते कहे छे. अग्यार लाख पल्योपम छप्पन हजार पल्योपम नवसो ने पचीस
पल्योपम ने एक पल्योपमनो त्रीजो जाग जाझेरु दुःख जोगवशे ॥१॥ काकंदी नगरीना
धन्ना अणगारे नव मासनुं चारित्र पाळ्युं,ते नव मासना श्वासोश्वास त्रण क्रोड पांच लाख
एकसठ हजार ने त्रणसो. ते धन्नो अणगार चवी सर्वार्थसिद्ध विमाने उपन्या. त्या ३३
सागरनुं आयुष्य छे. तेणे इहां मनुष्यपणामां नव मासनुं चारित्र पाळ्युं, कष्ट वेठ्युं, ते

एकेक श्वास उश्वासने कष्टे देवतानी गतिमा एकसो सात क्रोम सत्ताणुं लाख ठन्नु हजार
नवसो अठ्ठाणु पल्योपम ने एक पल्योपमनो ठहो नाग माठेरु एटलु देवतानु सुख नोग-
वशे हवे सवर तथा तपना फळनु प्रमाण कहे ठे सम्यक्दृष्टि जीव रागद्वेषरहित,
क्षमा दयासहित, पौषध पमिवजें ते सत्यावीससो ने सीत्तोतेर क्रोम सीत्तोतेर लाख सी-
त्तोतेर हजार सातसो ने सीत्तोतेर पल्य ने एक पल्यना नव नाग करीए ते माहिला आठ
नाग जाजेरु देवतानु आयुष्य बांधे ॥१॥ एक पहोरवेळा सुधी सवर आदरे ते त्रणसो
बेंतालीस क्रोम बावीस लाख बावीस हजार बसो बावीस पल्य ने एक पल्यना आठ नाग
करीए ते माहिला सात नाग जाजेरु देवतानु आयुष्य बांधे ॥२॥ एक मुहूर्त्त सुधीनो
सवर आदरे ते बाणु क्रोम ओगणसाठ लाख पचीस हजार नवसो ने पचास पल्य ने एक
पल्यना सात नाग करीए तेवा ठ नाग जाजेरु देवतानु आयुष्य बांधे ॥३॥ एक घमीनो
सवर आदरे ते ठेतालीस क्रोम, ओगणत्रीस लाख बासठ हजार नवसो ने सक्सठ पल्य ने
एक पल्यना ठ नाग करीए ते माहिला चार नाग जाजेरानु देवतानु आयुष्य बांधे ॥४॥

एक श्वासोश्वास सुधीनो सवर आदरे ते बे लाख चोपन हजार चारसो आठ पल्य ने एक पल्यनो चोथो भाग देवतानुं आयुष्य बांधे ॥५॥ एक नमोकारसी तप करे ते ओगणीस लाख त्रेसठ हजार बसो सत्तसठ पल्य ने एक पल्यना चोथा भागनुं देवतानुं आयुष्य बांधे ॥ ६ ॥ एक अनुपूर्वि गणे तेना जघन्य छासठ सागरनां नारकीना पाप नाश पामे, उत्कृष्ट पाचसो सागरनां नारकीना पाप नाश पामे ॥ ७ ॥ एक उणोदरी तप करे ते, सो वर्षे नारकी कर्म खपावे, तेथी अधिक खपावे ॥ ८ ॥ एक उपवास करे ते एक हजार वर्षे नारकी कर्म खपावे तेथी अधिक खपावे ॥९॥ एक छठ्ठ तप करे ते एक लाख वर्षे नारकी कर्म खपावे तेथी अधिक खपावे ॥ १० ॥ एक अठ्ठम तप करे ते क्रोड वर्षे नारकी कर्म खपावे तेथी अधिक खपावे ॥ ११ ॥ चार उपवास करे ते एक क्रोडाक्रोडी वर्षे नारकी कर्म खपावे तेथी अधिक खपावे ॥ १४ ॥

॥ इति श्वासोश्वासना बोल सपूर्ण ॥

# जीवना चौद भेद ॥

अथ जीवना चौद भेदनी चर्चा लिख्यते ॥

जीवना १४ भेद–तेमा सूक्ष्म केटला ? ने बादर केटला ? उत्तर–असन्नीना चार पहेला सन्नी बे ते तेरमो ने चौदमो ए बे ॥ १ ॥ जीवना १४ भेद तेमा त्रस केटला ? ने स्थावर केटला ? उत्तर–स्थावर चार पहेला, अने त्रसना उपला दस ॥ २ ॥ जीवना १४ भेद तेमा पर्याप्ता केटला ? अने अपर्याप्ता केटला ? उत्तर–सात अपर्याप्ता ते १-३-५-७ ए-११ १३, अने सात पर्याप्ता ते २ ४ ६ ८ १० १२-१४ ॥ ३ ॥ जीवना १४ भेद तेमा नजरे केटला आवे ? अने नजरे केटला न आवे ? उत्तर–सात अपर्याप्ता अने एक सूक्ष्म पर्याप्तानो ए आठ नजर न आवे, अने बाकी ७ भेद नजरे आवे ॥ ४ ॥ जीवना १४ भेद तेमां त्रस नाडीमा केटला ? अने स्थावर नाडीमा केटला ? उत्तर–त्रस नाडीमा १४ भेद लाभे, अने

स्थावर नाळीमां चार स्थावरना भेदनी नियमा. पांच अपर्यांसा अने संज्ञीनो पर्यांसो एम ६ भेदनी भजना वखते होय अने वखते न पण होय ॥ ५ ॥ जीवना १४ भेद तेमां आहारक केटला ? अने अणाहारक केटला ? उत्तर–सात अपर्यांसा ने एक सज्ञीनो पर्यांसो एम ७ अणाहारकमा लाभे, अने आहारकमा १४ भेद लाभे ॥ ६ ॥ जीवना १४ भेद तेमा मनसहित केटला ? अने मनरहित केटला ? उत्तर–मन सहित तो एक १४ मो अने मनरहित माहे १४ भेद लाभे॥७॥ जीवना १४ भेद तेमा गर्भज केटला ? अने अणगर्भज केटला ? उत्तर–गर्भज वे तेरमो ने चौदमो, अने अणगर्भजमां तो चौद लाभे॥८॥जीवना १४ भेद तेमां साश्वता केटला ? अने असाश्वता केटला ? उत्तर–साश्वता तेर भेद लाभे, ते एक १३ मो भेद वर्जिने, अने असाश्वतो एक १३ मो ज भेद लाभे ॥ ए ॥ जीवना १४ भेद तेमां प्रत्येक केटला ? ने साधारण केटला ? उत्तर–साधारणमां चार भेद पहेला लाभे, अने प्रत्येकमां १४ भेद लाभे. ॥ १० ॥ ए दस प्रश्न ॥ वाटे वेहेता जीवने शरीर केटलां लाभे ? उत्तर–तेजस १, कार्मण २, ए वे शरीर लाभे ॥ १ ॥ वाटे वेहेता जीवने जोग केटला लाभे ? उत्तर–एक कार्मण काय-

जोग ॥ २ ॥ वाटे वहेता जीवने उपयोग केटला लाजे ? उत्तर–मन पर्यवज्ञान १, चक्षुदर्शन २, ए बे वर्जिने वाकी १० उपयोग लाजे ॥ ३ ॥ वाटे वेहेता जीवने गुणठाणा केटला लाजे ? उत्तर–पहेलु, बीजु अने चोथु ए त्रण लाजे ॥४॥ वाटे वेहेता जीवने प्राण केटला ? उत्तर–एक आयुष्यप्राण ॥ ५ ॥ एक आगळीना टेरवामा जीवना जेद केटला? उत्तर–त्रण. सूक्ष्म एकेन्द्रियना बे जेद, एक सज्ञीनो पर्यातो एम ३ नी नियमा बीजा अपर्यातानी जजना जाणवी ॥ ६ ॥ हाथनी मुठ्ठीमा जीवना जेद केटला? उत्तर–पाच जेद चार स्थावरना जेद, एक सज्ञीनो पर्यातो एम ५ जेद लाजे ए ५ नी नियमा अने शेष अपर्यातानी जजना ॥ ७ ॥ चार जाषामा सत्य १, असत्य २, ए बे पर्याप्ति ( पूरी जाषा ) मिश्र १, व्यवहार २, ए बे अपर्याप्ति (अधूरी जाषा) ॥ ८ ॥ सौधर्म देवलोके जीवना १४ जेद तेमा केटला जेद लाजे? उत्तर–ठ जेद चार पहेला अने सज्ञीना २, ए ठ लाजे ॥ ए ॥ एमज रयणप्रजामा ठ जेद लाजे ॥ १० ॥ ए प्रश्न १०॥ एक आगळीना टेरवामा प्रदेश केटला लाजे? उत्तर–एक पोताना जीवना असख्याता प्रदेश लाजे. एम अनता जीवना प्रदेश लाजे ते

जीवथी प्रदेश असंख्यातगुणा अधिक लाभे ॥ १ ॥ एक आकाशप्रदेश उपर अजीवना केटला भेद लाभे? उत्तर—नव भेद धर्मास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायना २, पुद्गलना ४ अने एक अधासमयनो एम ए भेद लाभे ॥ २ ॥ अलोकमा अजीवना भेद केटला लाभे? उत्तर—आकाशास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, ए वे लाभे ॥३॥ एक जीवने माता केटली? अने पिता केटला? उत्तर—माता एक अने पिता घणा ॥ ४ ॥ पांचमे आरे छ नियंठामाहियी केटला लाभे? उत्तर—बीजो, त्रीजो अने चोथो ए त्रण लाभे ॥५॥ छ नियठामाहियी एक पुलाकनु साहरण न थाय, वाकी पांचनु साहरण थाय ॥६॥ छेवट्ठु संघयणनो धणी मरीने देवतामा जाय तो पहेला चार देवलोक सुधी जाय. पाचमे, छठ्ठे पहेला ५ संघयणनो धणी जाय. सातमे आठमे पहेला ४ संघयणनो धणी जाय. नवमे, दसमे, अग्यारमे अने वारमे देवलोके पहेला ३ संघयणनो धणी जाय. नव ग्रैवेयके पहेला वे संघयणनो धणी जाय पांच अनुत्तर विमाने तथा मोक्षमां एक पहेला सघयणनो धणी जाय ॥ ७ ॥ वधे वधे ते शु? तृष्णा ॥ १ ॥ घटे पण वधे नहि ते शुं? आयुष्य ॥२॥ घटे पण खरुं ने वधे

जीवना ॥१६॥

चोद भेद

पण खरु ते शुं? मनना परिणाम ॥३॥ न वधे न घटे ते शुं? तीर्थंकरे ज्ञान दीठा ते ॥४॥ वळी बीजा चार भांगा—वधे पण घटे नहि ते शुं? सिद्ध भगवत ॥१॥ घटे पण वधे नहि ते शुं? भव्यजीव ॥२॥ घटे ने वधे ते शुं? पडिवाइ समदृष्टि ॥३॥ न वधे न घटे ते शुं? अभव्य जीव ॥४॥ पांच इन्द्रियना सठाण ॥ श्रोत्रेन्द्रियनु सठाण कलबु फुलनु ॥१॥ चक्षु इंद्रियनु सठाण मसुरनी दाळनु ॥२॥ रसेन्द्रियनु सठाण ठरपलानु ॥३॥ घ्राणेन्द्रियनु सठाण नाविनी कोथळीनु ॥४॥ स्पर्शन्द्रियनु सठाण नाना प्रकारनु ॥५॥ पांच इन्द्रियना विषय कहे छे ॥ श्रोत्रेन्द्रियनो विषय १२ जोजननो ॥१॥ चक्षुइन्द्रियनो विषय लाख जोजननो ॥२॥ नासिका ॥३॥ जीभ ॥४॥ स्पर्शेन्द्रिय ए त्रणेनो विषय नव जोजननो ॥५॥ जीवतत्त्व चौद राजलोकमाहे लाभे ॥१॥ अजीवतत्त्व लोक अलोक माहि लाभे ॥२॥ पाप १, आश्रव २, बंध ३, ए लोक आखामाहि लाभे ॥५॥ पुण्यतत्त्व देशे ऊणा चौद राजलोकमाहि लाभे, 'लोगदेसेय वायरा' इति वचनात् ॥६॥ सवर ७, नीर्जरा ८, ए बे त्रिण लोकमा लाभे ॥८॥ मोक्षतत्त्व अढी द्वीपमाहि लाभे

॥ ए ॥ समकितनुं नाजन जीव ॥ १ ॥ जीवनु नाजन अजीव ॥ २ ॥ अजीवनु नाजन लोक ॥ ३ ॥ लोकनु नाजन अलोक ॥ ४ ॥ अलोकनुं नाजन केवलज्ञान, केवलदर्शन ॥५॥ उगी उगीने उग्या ते नरत महाराजा ॥ १ ॥ उगीने आथम्या ते ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति ॥२॥ आथमीने उग्या ते हरकेशी अणगार ॥ ३ ॥ आथमीने आथम्या ते कालसूरीयो कसाइ ॥ ४ ॥ ए चोनंगी ठाणांगे ठे ॥ पापनु कुटुंब कहे ठे ॥ पापनी माता हिंसा ॥ १ ॥ पापनो बाप लोन्न ॥ २ ॥ पापनो नाइ जूठो ॥ ३ ॥ पापनी बेन तृष्णा ॥ ४ ॥ पापनी स्त्री माया ॥ ५ ॥ पापनो दीकरो लालच ॥ ६ ॥ पापनी दीकरी कुबुद्धि ॥ ७ ॥ पापनु मूळ क्रोध ॥८॥ हवे जुदा जुदा द्रव्योना संठाण कहे ठे. त्रसकानु संठाण गाडानी उधनुं ॥ १ ॥ ठायानु संठाण पेटीनुं ॥२॥ अलोकनु संठाण पोला गोळानुं ॥ ३ ॥ अधोलोकनु संठाण त्रापानुं ॥ ४ ॥ त्रिठा लोकनुं संठाण झालरनु ॥ ५ ॥ उर्द्धलोकनुं संठाण मृदगनुं ॥ ६ ॥ दिवसनु संठाण मोतीनी लटनु ॥ ७ ॥ दिशानुं संठाण गाडानी उधनु ॥ ८ ॥ पृथ्वीनुं संठाण मसुरनी दाळनु ॥ ए ॥ पाणीनु संठाण पाणीना विंदुनुं ॥ १० ॥ अग्निनु संठाण सुइना

पण खरु ते शु? मनना परिणाम ॥३॥ न वधे न घटे ते शु? तीर्थंकरे ज्ञान दीठा ते ॥४॥ वळी बीजा चार भांगा–वधे पण घटे नहि ते शु? सिद्ध भगवंत ॥१॥ घटे पण वधे नहि ते शु? भव्यजीव ॥२॥ घटे ने वधे ते शु? पडिवाइ समदृष्टि ॥३॥ न वधे न घटे ते शु? अभव्य जीव ॥४॥ पांच इन्द्रियना संठाण ॥ श्रोत्रेन्द्रियनुं संठाण कलबु फुलनुं ॥१॥ चक्षु इन्द्रियनुं संठाण मसुरनी दाळनुं ॥२॥ रसेन्द्रियनुं संठाण अरपलानुं ॥३॥ घ्राणेन्द्रियनुं संठाण नाविनी कोथळीनुं ॥४॥ स्पर्शेन्द्रियनुं संठाण नाना प्रकारनुं ॥५॥ पांच इन्द्रियना विषय कहे छे ॥ श्रोत्रेन्द्रियनो विषय १२ जोजननो ॥१॥ चक्षुइन्द्रियनो विषय लाख जोजननो ॥२॥ नासिका ॥३॥ जीभ ॥४॥ स्पर्शेन्द्रिय ए त्रणेनो विषय नव जोजननो ॥५॥ जीवतत्त्व चौद राजलोकमाहे लाभे ॥१॥ अजीवतत्त्व लोक अ-लोक माहि लाभे ॥२॥ पाप १, आश्रव २, बंध ३, ए लोक आखामाहि लाभे ॥५॥ पुण्यतत्त्व देशे ऊणा चौद राजलोकमाहि लाभे, 'लोगदेसेय बायरा' इति वचनात् ॥६॥ संवर ७, नीर्जरा ८, ए बे तिर्छा लोकमा लाभे ॥८॥ मोक्षतत्त्व अढी द्वीपमाहि लाभे

॥ ए ॥ समकितनु भाजन जीव ॥ १ ॥ जीवनुं भाजन अजीव ॥ २ ॥ अजीवनुं भाजन
लोक ॥ ३ ॥ लोकनु भाजन अलोक ॥ ४ ॥ अलोकनु भाजन केवलज्ञान, केवलदर्शन ॥५॥
जगी जगीने जग्या ते भरत महाराजा ॥ १ ॥ जगीने आथम्या ते ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति ॥२॥
आथमीने जग्या ते हरकेशी अणगार ॥ ३ ॥ आथमीने आथम्या ते कालसूरीयो कसाइ
॥ ४ ॥ ए चोभंगी ठाणांगे छे ॥ पापनु कुटुंब कहे छे ॥ पापनी माता हिंसा ॥ १ ॥ पापनो
बाप लोभ ॥ २ ॥ पापनो भाइ जूठो ॥ ३ ॥ पापनी बेन तृष्णा ॥ ४ ॥ पापनी स्त्री माया
॥ ५ ॥ पापनो दीकरो लालच ॥ ६ ॥ पापनी दीकरी कुबुद्धि ॥ ७ ॥ पापनु मूळ क्रोध
॥८॥ हवे जुदां जुदां द्रव्योना संठाण कहे छे. तरुकानु संठाण गाडानी उधनु ॥ १ ॥ छायानु
संठाण पेटीनुं ॥२॥ अलोकनु संठाण पोला गोळानु ॥ ३ ॥ अधोलोकनु संठाण त्रापानु
॥ ४ ॥ त्रिछा लोकनु संठाण झालरनुं ॥ ५ ॥ उर्ध्वलोकनु संठाण मृदंगनु ॥ ६ ॥ दिवसनु
संठाण मोतीनी लटनु ॥ ७ ॥ दिशानु संठाण गाडानी उधनु ॥ ८ ॥ पृथ्वीनुं संठाण
मसुरनी दाळनुं ॥ ए ॥ पाणीनुं संठाण पाणीना बिंदुनुं ॥ १० ॥ अग्निनु संठाण सुइना

साधुजीनी अवगाहना उत्कृष्टी ५०० धनुष्यनी, आयुष्य देशे उणु पूर्व क्रोडनु देशव्रती श्रावकनी अवगाहना १००० जोजननी माछलानी अपेक्षाए, आयुष्य देशे उणु पूर्व क्रोडनु मरुदेवा मातानी अपेक्षाए ॥ ५ ॥ केवलीनी अवगाहना त्रण लोक प्रमाणे केवल समुद्घातनी अपेक्षाए आयुष्य देशे उणु पूर्व क्रोडनु ॥ ६ ॥ आखा लोकमाहि अजीवना जेद केटला? उत्तर–अग्यार जेद लाजे धर्मास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, आकाशास्तिकायनो देश १, प्रदेश २ कालनो १, पुद्गलना ४, एम ११ जेद लाजे ॥ ७ ॥ अलोकमा अजीवना बे जेद लाजे देश १ प्रदेश २, ए बे लाजे ॥ ८ ॥ अढिद्वीप बाहिर काल वर्जिने अजीवना १० जेद लाजे ॥ ए ॥ द्रव्य १, क्षेत्र २, काल ३, जाव ४ ए चारमां सूक्ष्म घणो कोण? ने थोडो कोण? उत्तर–सर्वथी थोडो सूक्ष्म काल १, तेथी क्षेत्र सूक्ष्म २, तेथी द्रव्य सूक्ष्म ३, तेथी जाव सूक्ष्म छे ॥ १० ॥ परमाणुनु परमाणुपणे जो पुद्गल रहे तो केटलो काळ रहे? उत्तर–असंख्यातो काळ रहे ॥ ११ ॥ जे आकाश प्रदेशे परमाणुओ हता ते फरीने तेज आकाश प्रदेशे पाछा

आवे तो केटले काळे आवे? उत्तर—असंख्याते काले ॥ १२ ॥ अजोगी घणा ? के अणाहारक घणा? उत्तर—अणाहारक घणा ते वाटे वेहेता अणाहारक ठे माटे ॥ १३ ॥ वाटे वेहेता जीव घणा ? के सिद्ध घणा ? उत्तर—वाटे वेहेता जीव घणा निगोद ठे माटे ॥१४॥

॥ इति जीवना चौद जेदनी चर्चा संपूर्ण ॥

## जीवना ५६३ भेद ॥

॥ अथ श्री ५६३ जेद जीवना ठे तेनी चर्चा ॥

गाथा—वेय १ दिठिय २ पज्जत्ते ३, सासए ४ सन्नि ५ चवणे ६ लेस्सा ७ ॥
जोगे ८ सरीरे ९ मणसहीए १०, दिठिगोयरे ११ गब्जजा १२ नालिए चेव १३ ॥ १ ॥
आया १४ मरणे १५ समुग्घाए १६, पज्जा १७ विजंग अणाणे १८ उहिनाणेय १९॥

१५ परमाधामी, ३ किलविषी, ए ग्रैवेयक, ५ अनुत्तरविमानना ए ३२ वर्जिने शेष ६७ जा तिना देवता ए सर्व मळी ए४ नेद प्रजाप्ताना लाने ॥ ८ ॥ बे दृष्टि ते समकित दृष्टि ने मिथ्यात्वदृष्टि, ए २ दृष्टिमा १७ए नेद लाने ते पहेली ६ नरकना अप्रजाप्ता ने ५ सज्ञी तिर्यच, ५ असज्ञी तिर्यच, ३ विगलेन्द्रिय ए १३ ना अप्रजाप्ता, १५ कर्मभूमि मनुष्यना अप्रजाप्ता ३० अकर्मभूमिना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता मळी ६० अकर्मभूमि ए ७५ नेद मनुष्यना, देवतामा १० नवनपति, १६ वाणव्यंतर, १० जंनका, १० ज्योतिषि, १२ देवलोक, ए लोकांतिक ए ६७ नेदना अप्रजाप्ता ने ए ग्रैवेयकना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता ए ८५ नेद देवताना सर्व मळी १७ए नेद लाने ॥ ए ॥ त्रणे दृष्टिमा ए४ नेद लाने ते समामिथ्यात्वीनी माफक जाणवु ॥ १० ॥ प्रजाप्तामां २३१ नेद लाने ते ७ नरकना, २४ तिर्यचना, १०१ सज्ञी मनुष्यना ए एए नेद देवताना. सर्व मळी २३१ भेद प्रजाप्ताना लाने ॥ ११ ॥ अप्रजाप्तामा ३३२ नेद लाने ते २३१ तो एना अप्रजाप्ता ने १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता ए ३३२ लाने ॥ १२ ॥ साश्वतामा २५० नेद लाने ते ७ नारकीना प्रजाप्ता, तिर्य-

चना ४८ नेदमांथी ५ संज्ञी तिर्यचना अप्रजासा वार्जीने शेष ४३ नेद तिर्यचना ने मनुष्य संज्ञी तेना १०१ नेदना प्रजासा, ९९ जातिना देवताना प्रजासा ए सर्व मळी २५० नेद लाने ॥ १३ ॥ अशाश्वतामाहि ३१३ नेद लाने. ते ७ नरकना अप्रजासा, ५ संज्ञी तिर्यचना अप्रजासा, १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजासा, १०१ संज्ञी मनुष्यना अप्रजासा ए २०२ मनुष्यना, ९९ जातिना देवताना अप्रजासा, सर्व मळी ३१३ नेद लाने ॥ १४ ॥ संज्ञीमा ४२४ नेद लाने ते १४ नेद नारकीना, ५ संज्ञी तिर्यचना अप्रजासा ने प्रजासा ए १० तिर्यचना सज्ञी मनुष्य १०१ ना अप्रजासा ने प्रजासा ए २०२ मनुष्यना ने १९८ नेद देवताना सर्व मळी ४२४ नेद लाने ॥ १५ ॥ असंज्ञीमांहि १३९ नेद लाने. ते १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजासा, ३८ नेद तिर्यचना, ते ४८ माथी १० नेद संज्ञीना वर्ज्या, शेष ३८ नेद तिर्यचना, सर्व मळी १३९ नेद लाने ॥ १६ ॥ पांचसे त्रेसठमाहि चवे तो ३७१ नेद चवे. ७ नरकना प्रजासा, ९९ देवताना प्रजासा, ४८ नेद तिर्यचना, ८६ जातिना जुगलियाना अप्रजासा वर्जीने शेष २१७ नेद मनुष्यना, सर्व मळी ३७१ नेद लाने ॥१७॥

न चवे तेमां १७२ न्नेद लाज्ने. ते ७ नरकना अप्रजाता, ७७ देवताना अप्रजाता, ७६ जुगलियाना अप्रजाता, सर्व १७२ न्नेद न चवे तेमां लाज्ने ॥ १८ ॥ आगली ३ लेश्या तेमा प्रत्येक २ मा ४५७ न्नेद लाज्ने ते नारकीना ६ न्नेद, ते एकेकी लेश्या त्रण त्रण नरके लाज्ने तेथी, ४८ न्नेद तिर्यचना, ३०३ न्नेद मनुष्यना, ५१ जाति देवताना अप्रजाता प्रजाता १०२, सर्व मळी ४५७ न्नेद लाज्ने ॥ १९ ॥ तेजुलेश्यामा ३४३ न्नेद लाज्ने ते बादर, पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ए ३ ना अप्रजाता, सज्ञी तिर्यचना १० न्नेद, सज्ञी मनुष्यना २०२ न्नेद, ६४ जातिना देवताना अप्रजाता प्रजाता १२८, सर्व मळी ३४३ न्नेद लाज्ने ॥२०॥ पद्मलेश्यामा हि ६६ न्नेद लाज्ने. ते सज्ञी तिर्यचना १० न्नेद, १५ कर्मभूमिना अप्रजाता प्रजाता ३०, देवतामा बीजो किलविषी, त्रीजो, चोथो, पाचमो देवलोक ने ए लोकातिक ए १३ ना अप्रजाता प्रजाता २६ सर्व मळी ६६ न्नेद लाज्ने ॥ २१ ॥ शुक्ल लेश्यामा ८४ न्नेद लाज्ने. ते सज्ञी तिर्यचना १० न्नेद, १५ कर्मभूमिना अप्रजाता प्रजाता ३०, ने देवतामांहि त्रीजो किलविषी १, छठेथी ते बारमा देवलोक सुधी ७ देवलोक, ए ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर विमान ए २२ ना अप्रजाता प्रजाता ४४,

सर्व मळी ८४ भेद लाभे ॥ २२ ॥ ठए लेश्यामां ४० भेद ते १० भेद संज्ञी तिर्यंचना ने ३० भेद मनुष्यना ते १५ कर्मभूमिना अप्रजाता ने प्रजाप्ता ३०, सर्व मळी ४० भेद लाभे ॥ २३ ॥ आगली ४ लेश्यामा २७७ भेद लाभे. ते प्रथम ५१ जातिना देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १०२, ने जुगलीयाना ८६ भेदना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १७२ ने बादर, पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ए ३ ना अप्रजाप्ता ए सर्व मळी २७७ भेद लाभे ॥ २४ ॥ उदारिक काययोगमां ३५१ भेद लाभे. ते ३०३ भेद मनुष्यना, ४८ भेद तिर्यंचना ए ३५१ भेद लाभे ॥ २५ ॥ उदारिक मिश्रयोगमां २४७ भेद लाभे ते १०१ समुर्छिम मनुष्य, १०१ संज्ञी मनुष्यना अप्रजाप्ता, १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता, तिर्यंचना २४ भेद अप्रजाप्ता बादर वायुकायनो प्रजाप्तो ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता सर्वे मळी २४७ भेद लाभे ॥ २६ ॥ वैक्रेय योगमां २३३ भेद लाभे ते १९८ देवताना, १४ भेद नारकीना, ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता, बादर वायुकायनो प्रजाप्तो, १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता, सर्व मळी २३३ भेद लाभे ॥ २७ ॥ वैक्रेयना मिश्रमां २१९ भेद लाभे. ते पूर्वे २३३ भेद कह्या तेमांथी ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर

विमान, ए १४ ना प्रजाप्ता वर्जिने शेष २१ए जेद लाजे ॥ २७ ॥ आहारक ने आहारकन मिश्रमा १५ कर्मजूमिना प्रजाप्ता ए १५ जेद लाजे ॥ २ए ॥ कार्मण काययोगमाहि ३४७ जेद लाजे ते ३३२ अप्रजाप्ता ने १५ कर्मजूमिना प्रजाप्ता, सर्व मळी ३४७ जेद लाजे ॥३०॥ सत्य मनादि ४ ने सत्य वचनादि ३ ए ७ जोगमा २१२ जेद लाजे. ते एए जातिना देवता ने ७ नारकी, १०१ सञ्ज्ञी मनुष्य, ५ सञ्ज्ञी तिर्यच ए सर्वेना पर्याप्ताना २१२ जेद पूर्वोक्त सात योगमा लाजे ॥ ३१ ॥ व्यवहार वचनमा २२० जेद लाजे ते पूर्वे सत्यमनादिमा २१२ जेद कह्या तेज ने ५ असञ्ज्ञी तिर्यच ने ३ विगलेन्डियना ए ७ ना प्रजाप्ता सर्वे मळी २२० जेद लाजे ॥ ३२ ॥ उदारिक शरीरमा ३५१ जेद लाजे ते ५६३ मायी १४ जेद नारकीना ने १एए जेद देवताना वर्जिने शेष ३५१ जेद लाजे ॥३३ ॥ वैक्रेय शरीरमाहि २३३ जेद लाजे ते १एए जेद देवताना, १४ जेद नारकीना, १५ कर्मजूमिना प्रजाप्ता, ५ सञ्ज्ञी तिर्यचना प्रजाप्ता, बादर वाउकायनो प्रजाप्तो ए २३३ जेद लाजे ॥ ३४ ॥ आहारक शरीरमा १५ कर्मजूमिना प्रजाप्ताना लाजे ॥३५॥ तेजस, कार्मण शरीरमा ५६३ जेद लाजे ॥३६॥ अणाहारकमा

३४७ नेद लाने ते कार्मण काययोगनी माफक जाणवु ॥ ३७ ॥ आहारकमा ५६३ नेद लाने. ॥३८॥ मनसहितमा २१२ नेद लाने ते सत्य मननी माफक जाणवु ॥३९॥ मनरहितमा ३५१ नेद लाने ते ७ नरकना अप्रजाप्ता, ४३ नेद तिर्यचना ते ५ सञ्ज्ञी तिर्यचना प्रजाप्ता वर्जिने शेष ४३ नेद तिर्यचना, १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता, १०१ सञ्ज्ञी मनुष्यना अप्रजाप्ता ए २०२, ९९ जातिना देवताना अप्रजाप्ता ए सर्व मळी ३५१ नेद लाने ॥ ४० ॥ नजरे आवे तेमा २२५ नेद लाने ते ७ नरक, ९९ जातिना देवता, १०१ गर्नज मनुष्य, ५ सञ्ज्ञी तिर्यच, ५ असंज्ञी तिर्यच ३ विगलेन्द्रिय, ५ वादर एकेन्द्रिय ए सर्वना प्रजाप्ता एम २२५ नेद लाने ॥४१॥ नजरे न आवे तेमा ३३८ नेद लाने. ते ३३२ तो अप्रजाप्ता, ५ सूक्ष्म एकेन्द्रिय ने साधारण वनस्पति ए ६ ना प्रजाप्ता ए सर्व मळी ३३८ नेद लाने ॥ ४२ ॥ गर्नजमा २१२ नेद लाने. ते २०२ सञ्ज्ञी मनुष्यना ने १० नेद सञ्ज्ञी तिर्यचना, ए सर्व मळी २१२ नेद लाने ॥ ४३ ॥ अणगर्नजमा ३५१ नेद लाने. ते १४ नारकीना, १९८ नेद देवताना, ३८ नेद तिर्यचना ते ४८ माथी १० नेद सञ्ज्ञीना वर्ज्या १०१ समु-

जाप्ता ने प्रजाप्ता १०, असंज्ञी तिर्यंचना ५ नेद ने ३ विगलेन्द्रियना ए ७ ना प्रजाप्ता ने सज्ञी मनुष्यना २०२ नेद ने एए जातिना देवताना प्रजाप्ता एम ३२६ नेद लाने ॥ ६३ ॥ मन पर्यायमा २१२ नेद लाने ते ७ नारकीना, ५ सज्ञी तिर्यंच ने १०१ सज्ञी मनुष्य, एए जातिना देवता, ए सर्वना प्रजाप्ता २१२ मा मन पर्याय लाने,॥ ६४ ॥ विनग ज्ञानमा २२२ नेद लाने ते ५ अनुत्तर विमानना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १० नेद वर्ज्या, बाकी १७७ नेद देवताना ने १४ नेद नारकीना, १५ कर्मनूमिना मनुष्यना प्रजाप्ता ने ५ सज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता ए २२२ नेद लाने ॥ ६५ ॥ अवधिज्ञानमा २१० नेद लाने ते १५ परमाधामी, ३ किलविषी ए १७ वर्जिने शेष ७१ जातिना देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १६२ ने १३ नारकीना ते १४ माथी सातमी नरकनो अप्रजाप्तो वर्जिने १३ नेद ने १५ कर्मनूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ३० ने ५ सज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता ए २१० नेद लाने ॥६६॥ अवधिदर्शनमाहि २४७ नेद लाने. तेमा १९७ नेद देवताना, १४ नेद नारकीना, १५ कर्मनूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३० ने ५ सज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता ए सर्वे मळी २४७

भेद लाभे ॥ ६७ ॥ परितमांहि ५६३ भेद जीवना लाभे ॥ ६८ ॥ अपरितमां ५५३ भेद जीवना लाभे ते ५६३ मांथी ५ अनुत्तर विमानना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १० भेद वर्ज्या, शेष ५५३ भेद लाभे ॥ ६९ ॥ संजतिमां १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता लाभे, ॥ ७० ॥ सजतासजतिमां १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता ने ५ संज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता ए २० भेद लाभे ॥ ७१ ॥ असंजतिमां ५६३ भेद लाभे ॥ ७२ ॥ पहेला गुणठाणामां ५५३ भेद लाभे. ते ५ अनुत्तर विमानना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १० भेद वर्ज्या, शेष ५५३ भेद लाभे॥ ७३ ॥ सास्वादान गुणठाणामां २१३ भेद लाभे ते १३ भेद नारकीना, ते १४ मांथी ७ मी नरकनो अप्रजाप्तो वर्ज्यो ने १८ भेद तिर्यंचना, ३ विगलेन्द्रिय ने ५ असंज्ञी तिर्यंच पचेन्द्रिय ए ८ ना अप्रजाप्ता ने ५ संज्ञी तिर्यंच पचेन्द्रियना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १० ने ८ पूर्वे कह्या ते ए १८ ने १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ३० ने देवता ९९ जातिमांहिथी १५ परमाधामी, ३ किल-विषी, ५ अनुत्तर विमान ए २३ वर्जिने शेष ७६ जातिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १५२ भेद देवताना, ए सर्व मळीने २१३ भेद लाभे ॥ ७४ ॥ मिश्र गुणठाणामां ९४ भेद लाभे ते

णंमा ११ नेद लान्ने ते धर्मास्तिकायनो देश १, अधर्मास्तिकायनो देश २, आकाशास्तिकायनो स्कध ३ ए ३ जता वाकी ११ लान्ने ॥ ७७ ॥ अधूरामा ११ नेद लान्ने ते धर्मास्तिकायनो स्कध १, अधर्मास्तिकायनो स्कध २, आकाशास्तिकायनो स्कध ३, ए ३ जता वाकी ११ नेद लान्ने ॥ ७७ ॥ अलोकाकाशमा २ नेद लान्ने, ते आकाशास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, ए २ लान्ने ॥ ७ए ॥ आकाशास्तिकायना प्रदेशमां ७ नेद ते धर्मास्तिकायना प्रदेशनी माफक जाणवु ॥ए०॥

॥ इति जीवना ५६३ नेदनी चर्चा सपूर्ण ॥

## महादंडक ॥

॥ अथ श्री जीवाजीवाभिगमादिसूत्रथी महादंडकना वोल लिखते ॥

गाथा–दृग १ लेस्सा २ ट्टिइ ३, उग्गाहण ४ विरहकालए ५ चेव ॥

जवण ६ गयागइ ७, सघयण ८ संठाण ९ वेदे १० य ॥ १ ॥
जोगु ११ वओग १२ सरीर १३, गुणठाण १४ दिठ्ठी १५ य पज्जत्ती १६ ॥
पाणे १७ नाण अनाणे १८, सजइ १९ माइण आहारे २० ॥ २ ॥
आहार २१ इच्छाहारे २२, कायठिइ २३ समुग्घाय २४ कुलकोडी २५ ॥
आउ २६ देव २७ जराय २८, परिग्गहय २९ सतरं ३० चेव ॥ ३ ॥

ए ३० द्वार ते २४ दंडक उपर उतारवा ते कहे छे. ते मध्ये प्रथम दंडकद्वार कहे छे. साते नरकनो दंडक १. तेनां नाम—घमा १, वंसा २, शिला ३, अजना ४, रिठा ५, मघा ६, माघवइ ७ हवे तेना गोत्र कहे छे रत्नप्रभा १, शर्करप्रभा २, वालुप्रभा ३, पंकप्रभा ४, धूमप्रभा ५, तमप्रभा ६, तमतमाप्रभा ७ ॥ १ ॥ दस दंडक भवनपतिना कहे छे असुरकुमार १, नागकुमार २, सुवनकुमार ३, विज्जुकुमार ४, अग्निकुमार ५, द्वीपकुमार [illegible] ७, दिशाकुमार ८, पवनकुमार ९, स्तनितकुमार १० ॥ ११ ॥ पृथ्वी- [illegible] तेउकाय १४, वायुकाय १५, वनस्पतिकाय १६ ॥ सत्तरमो दंडक बे

इंड्रियनो ते कीमा, पोरा, अलसीया, करमिया, सरमियां, जलो, ठीप, शंख प्रमुख ॥१७॥ तेइंड्रियनो १० मो दंमक ते कीमी, कथवा, जू, कीमा, मकोमा, घीमेल, चाचम प्रमुख ॥ १० ॥ चउरिंड्रियनो दंमक १ए मो ते नमरा, नमरी, माखी, मास, टीम, चगा प्रमुख ॥ १ए ॥ तिर्यंच पचेन्ड्रियनो दंमक २० मो नेमा जलचरना ५ नेद मच्छ कच्छ गाहा मगर सुसमार प्रमुख स्थलचरना ४ नेद–एगखुरा १, दोखुरा २, गमीपया ३, सणहपया ४ ॥ खेचरना ४ नेद–चर्मपखी १, रोमपखी २, विततपखी ३, समुगपखी ४ ॥ उरपरना ४ नेद–सर्प १, अजगर २, महोरग ३, आसालीया ४ ॥ जुजपरना अनेक नेद ते घो उदर खीसकोली प्रमुख ॥ २० ॥ मनुष्यनो दंमक २१ मो ॥ ते मनुष्यने उपजवानां ठाम. पदर कर्मनूमि ते असि मसि कसि एहथी आजीविका करे, अने मोक्षमार्गने साधे ते ५ नरत, ५ एरवत, ५ महाविदेह ए १५ ॥१॥ अकर्मनुमि ते असि, मसि, कसि ए त्रण प्रकारनो व्यापार नथी अने १० प्रकारना कल्पवृक्षे करी जीवे ते ५ हेमवय, ५ एरणवय, ५ हरिवास, ५ रमकवास, ५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरु ए ३० अकर्मनूमि ॥ २ ॥ ठप्पन अंतरद्वीपा

ते जंबूद्वीप मध्ये हेमवत पर्वत अने शिषरी पर्वत थकी पूर्व अने पश्चिमनी दिशिए स-
मुद्र मध्ये बे बे दाढा नीकळी ठे, ते एकेकी दाढाए सात सात द्वीपा ठे तेनु मान
प्रथम ३०० जोजन गया पठी पहेलो द्वीपो ठे तिहांथकी ४०० जोजन गया पठी बीजो
द्वीपो ठे तिहांथकी ५०० जोजन गया पठी त्रीजो द्वीपो ठे तिहांथकी ६०० जोजन
गया पठी चोथो द्वीपो ठे तिहांथकी ७०० जोजन गया पठी पाचमो द्वीपो ठे तिहां
थकी ८०० जोजन गया पठी ठठो द्वीपो ठे तिहांथी ९०० जोजन गया पठी सातमो
द्वीपो ठे. ए रीते ८ दाढाए ५६ अंतरद्वीपा ठे सर्वे अढीद्वीप मध्ये जाणवा ॥ ३ ॥
हवे समुर्छिम मनुष्य उपजवानां ठाम कहे ठे ॥ उच्चारेसुवा १, पासवणेसुवा २, खेलेसुवा
३, संघाणेसुवा ४, वंतेसुवा ५, पितेसुवा ६, सोणिएसुवा ७, पुएसुवा ८, सुक्केसुवा ९, सुक्क
पोग्गल परिसाडीयेसुवा १०, विगयजीव कलेवरेसुवा ११, इत्थीपुरिससंजोगेसुवा १२,
नगर निधम्मणेसुवा १३, सव्वेसु चेव असुइठाणेसुवा १४ ॥ ४ ॥ २१ ॥ २२ मो वाणव्यंतरनो
दंडक तेना नाम–पिशाच १, भूत २, यक्ष ३, राक्षस ४, किंनर ५, किंपुरुष ६, महोरग ७, गांधर्व
८, आणपन्नी ९, पाणपन्नी १०, इसीवाइ ११, भुयवाइ १२, कंदीय १३, महाकंदीय १४, कोहंड

१५ पयगदेव १६ ॥ ए सोलनी काय व्यतरनी जात अने एकेकीनी काये बे बे इन्द्र जाणवा ॥२२॥ २३ मो ज्योतिषीनो दंडक ते चन्द्र १, सूर्य २, ग्रह ३, नक्षत्र ४, तारा ५, ए ५ चर अढी द्वीप मध्ये छे, ने पाच अचर अढीद्वीपनी बाहीर छे ॥ २३ ॥ २४ मो विमानीक देवतानो दंडक ॥ सुधर्म्म १, इशान २, सनत्कुमार ३, माहेंद्र ४, ब्रह्मलोक ५, लातक ६, महासुक्र ७, सहसार ८, आणत ९, प्राणत १०, आरण ११, अच्चुय १२ ॥ हवे नव ग्रैवेयक कहे छे ॥ भद्दे १, सुभद्दे २, सुजाए ३, सुमाणसे ४, पियदसणे ५, सुदसणे ६, आमोहे ७, सुपडिबद्धे ८, जसोधरे ९ ॥ हवे पाच अनुत्तर विमानना नाम कहे छे ॥ विजय १, विजयत २, जयत ३, अपराजित ४, सर्वार्थसिद्ध ५ ॥ सर्वार्थसिद्ध उपरे इसिप्पब्भारा पृथ्वी ते सिद्धिशिला तना बार नाम छे ते कहे छे ॥ इसीतिवा १, इसीप्पब्भारा तिवा २, तणुतिवा ३ तणुतणुतिवा ४, सिद्धितिवा ५, सिद्धालयतिवा ६, मुत्तीतिवा ७, मुत्तालयतिवा ८, लोयगेतिवा ९, लोगथुभियातिवा १०, लोगपडिबोहेतिवा ११, सव्वपाणभुयजीव सत्त सुहावहेतिवा ॥ १२ ॥ २४ ॥

॥ इति प्रथम दंडकद्वार सपूर्ण ॥ १ ॥

हवे वीजु लेश्याद्वार कहे छे ॥

गाथा—नाम१ वण्ण२ रस३ गंध४, फास५ परिणाम६ लक्खण७ सठाण८॥
ठिइए गइ१० चवण११ द्वारा, एगारस लेस्साणं णेया ॥ १ ॥

ए ११ द्वार छ लेश्या उपर उतारवा तेमां प्रथम नामद्वार कहे छे कृष्णलेश्या १, नील लेश्या २, कापोत लेश्या ३, तेजु लेश्या ४, पद्म लेश्या ५ अने शुक्ल लेश्या ६ ॥१॥ वीजु लेश्याना वर्णनु द्वार कहे छे भाव लेश्यामा एके वर्ण नथी द्रव्य लेश्यामां कृष्णादि पाचे वर्ण होय तेमा कृष्ण लेश्यानो वर्ण (रंग)—जेवो पाणीसहित मेघ काळो, जेवा पाडाना शींगडा काळा, जेवा अरीठाना बीज काळा, जेवुं गाडानुं खजन, आखनी कीकी ए करता अनन्तगुणो काळो॥१॥ नील लेश्यानो वर्ण—जेवुं अशोक वृक्ष नीलुं, जेवी चास पक्षीनी पाख, जेवु वैडुर्य रत्न एथी अनन्तगुणो नील लेश्यानो नीलो वर्ण छे ॥ २ ॥ कापोत लेश्यानो वर्ण जेवा अळशीना फूल, जेवी कोयलनी पाख, जेवी पारेवानी डोक कांइक राती काइक काळी ए करता अनन्तगुणो अधिक कापोत लेश्यानो

१५ पयगदेव १६ ॥ ए सोलनी काय व्यतरनी जात अने एकेकीनी काये वे वे इंद्र जाणवा ॥२२॥ २३ मो ज्योतिषीनो दंडक ते चंद्र १, सूर्य २, ग्रह ३, नक्षत्र ४, तारा ५, ए ५ चर अढी द्वीप मध्ये ठे, ने पाच अचर अढीद्वीपनी बाहीर ठे ॥ २३ ॥ २४ मो विमानीक देवतानो दंडक ॥ सुधर्म्म १, इशान २, सनत्कुमार ३, माहेंद्र ४, ब्रह्मलोक ५, लातक ६, महासुक्र ७, सहसार ८, आणत ९, प्राणत १०, आरण ११, अच्चुय १२ ॥ हवे नव ग्रैवेयक कहे ठे ॥ भद्दे १, सुभद्दे २, सुजाए ३, सुमाणसे ४, पियदसणे ५, सुदसणे ६, आमोहे ७, सुपडिबद्धे ८, जसोधरे ९ ॥ हवे पाच अनुत्तर विमानना नाम कहे ठे ॥ विजय १, विजयत २, जयत ३, अपराजित ४, सर्वार्थसिद्ध ५ ॥ सर्वार्थसिद्ध उपरे इसिप्पभारा पृथ्वी ते सिद्धिशिला तना बार नाम ठे ते कहे ठे ॥ इसीतिवा १, इसीप्पभारा तिवा २, तणुतिवा ३ तणुतणुतिवा ४, सिद्धितिवा ५, सिद्धालयतिवा ६, मुतीतिवा ७, मुत्तालयतिवा ८, लोयगेतिवा ९, लोगथुभियातिवा १०, लोगपडिबोहेतिवा ११, सव्वपाणभुयजीव सत्त सुहावहेतिवा ॥ १२ ॥ २४ ॥

॥ इति प्रथम दंडकद्वार सपूर्ण ॥ १ ॥

हवे बीजुं लेश्याद्वार कहे छे ॥

गाथा—नाम१ वण्ण२ रस३ गंध४, फास५ परिणाम६ लक्खण७ सट्ठाण८ ॥
ठिइए९ गइ१० चवण११ द्दारा, एगारस लेस्साण णेया ॥ १ ॥

ए ११ द्वार छ लेश्या उपर उतारवा तेमां प्रथम नामद्वार कहे छे. कृष्णलेश्या १, नील लेश्या २, कापोत लेश्या ३, तेजु लेश्या ४, पद्म लेश्या ५ अने शुक्ल लेश्या ६ ॥१॥ बीजु लेश्याना वर्णनु द्वार कहे छे. भाव लेश्यामा एके वर्ण नथी. द्रव्य लेश्यामा कृष्णादि पांचे वर्ण होय तेमा कृष्ण लेश्यानो वर्ण (रंग)—जेवो पाणीसहित मेघ काळो, जेवा पाडाना शींगडा काळां, जेवा अरीठाना बीज काळा, जेवु गाडानु खंजन, आंखनी कीकी ए करता अनन्तगुणो काळो ॥ १ ॥ नील लेश्यानो वर्ण—जेवु अशोक वृक्ष नीलु, जेवी चास पक्षीनी पांख, जेवु वैडुर्य रत्न एथी अनन्तगुणो नील लेश्यानो नीलो वर्ण छे ॥ २ ॥ कापोत लेश्यानो वर्ण जेवा अळशीना फूल, जेवी कोयलनी पांख, जेवी पारेवानी डोक कांइक राती कांइक काळी ए करतां अनन्तगुणो अधिक कापोत लेश्यानो

॥ ३॥

परिणामनु द्वार कहे छे लेश्या त्रण प्रकारे परिणमे—जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट, तथा त्रण प्रकारे परिणमे ते उपर त्रण कही तेना अकेकना त्रण त्रण भेद थाय, जेमके, जघन्यनो जघन्य, जघन्यनो मध्यम, जघन्यनो उत्कृष्ट ए रीते दरेकना त्रण त्रण भेद करता नव भेद थाय एम नवना सत्तावीस भेद थाय एम सत्तावीसना एकाशी भेद थाय एम एकाशीना वसे ने तेतालीस भेद थाय एटले भेदे लेश्या परिणमे ॥ ६ ॥ सातमु लेश्याना लक्षणनु द्वार कहे छे तेमा प्रथम कृष्णलेश्याना लक्षण कहे छे—पाच आश्रवनो सेवनार, त्रण अगुप्तिवंत, छकाय जीवनो हिंसक, आरंभनो तिव्र परिणामी तथा द्वेषी, पाप करवामा साहसीक, निठोर परिणामी, जीवहिंसा शुग रहित करनार, अजितेन्द्रिय एवा जोगे करी सहित होय तेने कृष्ण लेश्यानु लक्षण जाणवु ॥' ॥ नील लेश्याना लक्षण कहे छ इर्ष्यावंत, अमर्षवंत, तपरहित, मायाथी पाप करता, लाजे नहीं, गृधी, धूतारो, प्रमादी, रसनो लोलुपी, मायानो गवेषी, आरंभनो अत्या ।, पापने विषे साहसीक ए नील लेश्याना लक्षण जाणवा ॥ २ ॥ कापोत लेश्याना लक्षण कहे छे—

वाका बोलो, वांका काम करनार, माया करोने हरखाय, सरळपणाथी रहित, मोढे जूदो अने पुठे जुदो, मिथ्या—खोटा वचननो बोलनार, चोरी मत्सरनो करनार, ए कापोत लेश्याना लक्षण जाणवां ॥ ३ ॥ तेजु लेश्याना लक्षण कहे छे—मर्यादावत, मायारहित, चपळपणाथी रहित, कुतूहळ रहित, विनयवंत, दमितेन्द्रिय, शुभ जोगवत, उपध्यान तप सहित, दृढधर्मि, प्रियधर्मि, पाप थकी बीहे, ए तेजुलेश्यानां लक्षण जाणवा ॥ ४ ॥ पद्म लेश्याना लक्षण कहे छे—क्रोध, मान, माया, लोभ पातळा करी छे, प्रशान्त चित्त, आत्मानो दमणहार, योगउपध्यान सहित होय, थोका बोलो, उपशान्त, जितेन्द्रिय, ए पद्मलेश्याना लक्षण जाणवा ॥ ५ ॥ शुक्ल लेश्याना लक्षण कहे छे- आर्त्तध्यान रोद्रध्यानथी सर्वथा रहित, धर्मध्यान शुक्लध्यानथी सहित, दश प्रकारनी चित्त समाधीए करी सहित, आत्मानो दमणहार, इत्यादिक शुक्ल लेश्याना लक्षण जाणवा ॥ ६ ॥ हवे आठमु स्थानद्वार कहे छे—स्थान एटले उत्कर्षे के अपकर्षे करी लेश्यानु परस्पर तारतम्य असख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटलां के असंख्यात लोकना आकाश प्रदेश जेटला थाय तेटला लेश्याना

स्थानक ठे भावलेश्यामा संक्लिष्ट परिणाम के विशुद्ध परिणामना तारतम्यरूप असंख्यात स्थानक ठे अने द्रव्यलेश्यामा तेवा द्रव्यस्कधो असख्यात असंख्यात ठे एक परिणामे एक वखते जेटलां द्रव्योनु ग्रहण कर्यु ते एक स्थानक द्रव्यलेश्या परत्वे कही शकाय ते स्थानकना बे प्रकार. जघन्य स्थानक अने उत्कृष्ट स्थानक जघन्यनी पासेना स्थानकोनो जघन्यमा अने उत्कृष्टनी पासेना स्थानकोनो उत्कृष्टमा अतर्भाव करवाथी मध्यम स्थानकोनो त्रीजो भेद आहि गण्यो नथी हवे ठ लेश्याना स्थानकनु अल्पबहुत्व सर्वथी थोमा कापोत लेश्याना स्थानक १ तेथी नील लेश्याना स्थानक असंख्यातगुणा २ तेथी कृष्ण लेश्याना स्थानक असख्यातगुणा ३ तेथी तेजु लेश्याना स्थानक असख्यातगुणा ४ तेथी पद्म लेश्याना स्थानक असंख्यातगुणा ५ तेथी शुक्ल लेश्याना स्थानक असख्यात गुणा ६ ॥ ८ ॥ नवमु लेश्यानी स्थितिनु द्वार कहे ठे-कृष्ण लेश्यानी स्थिति जघन्य अतर्मुहूर्त्तनी, उत्कृष्टी ३३ सागर ने १ अतर्मुहूर्त्त अधिकनी ॥ १ ॥ नील लेश्यानी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० १०

सागर पल्यने असख्यातमे जागे अधिकनी ॥ २ ॥ कापोत लेश्यानी स्थिति ज० अतर्मुहूर्त्तनी, उत्० ३ सागर पल्यने असंख्यातमे जागे अधिकनी ॥ ३ ॥ तेजुलेश्यानी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० २ सागर पल्यने असंख्यातमे जागे अधिकनी ॥४॥ पद्म लेश्यानी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १० सागर अतर्मुहूर्त्त अधिकनी ॥ ५ ॥ शुक्ल लेश्यानी स्थिति ज० अतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३३ सागर अतर्मुहूर्त्त अधिकनी ॥ ६ ॥ ए स्थिति लेश्यानी समुच्चय कही. हवे ४ गतिनी स्थिति कहे छे—नरकगतिनी कापोत लेश्यानी स्थिति ज० दश हजार वर्षनी, उत्० ३ सागर पल्यने असख्यातमे जागे अधिकनी ॥ १ ॥ नील लेश्यानी स्थिति ज० ३ सागर जाझेरी ने पल्यना असंख्यातमा जाग अधिकनी, उ० १० सागर पल्यना असख्यातमा जाग अधिकनी ॥ २ ॥ कृष्ण लेश्यानी स्थिति ज० १० सागरनी, उत्० ३३ सागर ने अंतर्मुहूर्त्ताधिकनी ॥३॥ ए नारकीनी लेश्यानी स्थिति कही. हवे तिर्यंच मनुष्यनी लेश्यानी स्थिति कहे छे—तिर्यंच अने मनुष्य ज्या ज्या जाय त्या त्या ज० उ० प्रथम पाचे लेश्यानी अतर्मुहूर्त्तनी स्थिति जाणवी. केवलज्ञान आश्रि शुक्ल लेश्यानी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० नव

वर्ष उणी पूर्व कोमीनी ए लेश्या तिर्यच मनुष्यनी कही. हवे देवतानी स्थिति कहे छे–तेमा जवनपति व्यतर आश्रि कृष्ण लेश्यानी स्थिति ज० दश हजार वर्षनी, उत्० पल्यना असख्यातमा जागनी ॥ १ ॥ जेटली कृष्ण लेश्यानी उत्कृष्टी स्थिति तेटली १ समयाधिक नील लेश्यानी ज० स्थिति, उत्० पल्योपमना असख्यातमा जागनी ॥ २ ॥ जेटली उत्० नीलनी स्थिति तेटली १ समयाधिक कापोत लेश्यानी ज० स्थिति, उत्० पल्योपमना असख्यातमा जागनी ॥ ३ ॥ समुच्चय देव आश्रि तेजुलेश्यानी स्थिति ज० १० हजार वर्षनी, उ०२ सागर ने पल्यना असंख्यातमा जाग अधिकनी ज्योतिषी, वैमानिक आश्रि तेजुलेश्यानी स्थिति ज० पल्य १नी, उत्० २ सागर पल्यने असख्यातमे जाग अधिकनी ॥ ४ ॥ जेटली तेजु लेश्यानी उत्० स्थिति तेटली १ समय अधिक पद्मलेश्यानी ज० स्थिति, उ० १० सागर अतर्मुहूर्त्त अधिकनी ॥५॥ जेटली पद्म लेश्यानी उत्० स्थिति तेटली १ समयाधिक शुक्ल लेश्यानी ज० स्थिति, उत्० ३३ सागर अतर्मुहूर्त्ताधिकनी ॥६॥७॥ दशमु लेश्यानी गतिनु द्वार कहे छे–कृष्ण, नील, कापोत ए त्रण अप्रशस्त अधम लेश्या,

तेणे करी जीव डुर्गति पामे तेजु, पद्म, शुक्ल ए त्रण धर्म लेश्या, तेणे करीने जीव सुगतिए जाय ॥ १० ॥ अगीआरमु लेश्याना चवननुं द्वार कहे छे सघळी लेश्या प्रथम परिणमती वखते कोइ जीवने उपजवु के चववु नथी तथा लेश्याना छेल्ला समये कोइ जीवने उपजवु के चववु नथी परज्जवने विषे केम चवे ते कहे छे--लेश्या परज्जवनी आवी थकी अतर्मुहूर्त्त गया पछी शेष अंतर्मुहूर्त्त आउखा आमा रहे थके जीव परलोकने विषे जाय. ॥ ११ ॥ समुच्चय सलेशीमा छ लेश्या लाजे १--२ नरके कापोत लेश्या २, त्रीजी नरके कापोत घणी नील थोमी ३, चोथी नरके नील लेश्या ४, पांचमी नरके नील घणी कृष्ण थोमी ५, छट्ठी नरके कृष्ण लेश्या ६, सातमी नरके महाकृष्ण लेश्या ७ ॥ १ ॥ १० ज्ञवनपतिमां लेश्या ४ लाजे ॥ ११ ॥ पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ए त्रणना अपर्याप्तावस्थामां लेश्या ४, पर्याप्तावस्थामा ३ लेश्या ॥ १४ ॥ तेउ वाउ त्रण विगलेन्द्रिय ए पांचमां पहेली ३ लेश्या ॥ १ए ॥ तिर्यच पचेन्द्रिय समुर्छिममां प्रथम ३ लेश्या, गर्ज्जजमा ६ लेश्या ॥ २० ॥ मनुष्यमां पण तेज रीते जाणवी ॥ २१ ॥ वाणव्यतरमां प्रथम ४ लेश्या ॥ २२ ॥ ज्योतिषीमां १

तेजु लेश्या ॥ २३ ॥ वैमानिकमा १–२ देवलोके तेजु लेश्या, ३–४–५ देवलोके पद्म लेश्या, छट्टाथी सर्वार्थसिद्ध लगी शुक्ल लेश्या ॥ २४ ॥ सिद्ध अलेशी जाणवा हवे छ लेश्याना जीवनु अल्पबहुत्व छे–सर्वथी थोमा शुक्ललेशी १ तेथी पद्मलेशी सख्यातगुणा २ तेथी तेजुलेशी स० ३ तेथी अलेशी अनतगुणा ४ तेथी कापोतलेशी अन० ५ तेथी नील लेशी विसेसाहिया ६ तेथी कृष्णलेशी वि० ७ तेथी सलेशी विसेसाहिया ८ ॥ ए लेश्यानो अधिकार उत्तराध्ययन सूत्रना अध्ययन ३४ मा तथा पन्नवणा पद १७ मा तथा जीवाभिगम सूत्रमा छे, त्याथी विस्तारे जाणवो

॥ इति बीजु लेश्याद्वार सपूर्ण ॥

---

अथ त्रीजु स्थितिद्वार कहे छे ॥

समुच्चय स्थिति आश्रि जघन्य अतर्मुहूर्त्तनी, उत्कृष्टी ३३ सागरनी हवे तेनो

जुदो जुदो विवरो कहे ठे पहेली नरके ज० दश हजार वर्ष, उ० १ सागर ॥ वीजी नरके ज० १ सागर, उ० ३ सागर ॥ त्रीजी नरके ज० ३ सागर, उ० ७ सागर ॥ चोथी नरके ज० ७ सागर, उ० १० सागर ॥ पांचमी नरके ज० १० सागर, उ० १७ सागर ॥ ठ्ठी नरके ज० १७ सागर, उ० २२ सागर ॥ सातमी नरके ज० २२ सागर, उ० ३३ सागर ॥ ए प्रत्येक प्रत्येक नरकना नाम आश्रि आयुष्य कह्यां. हवे प्रतर न्नेदे आयुष्य कहे ठे—पहेली नरके प्रतर १३ ठे. तेमा पहेले प्रतरे ज० १० हजार वर्ष, उ० ए० हजार वर्ष ॥ वीजे ज० ए० हजार वर्ष, उ० ए० लाख वर्ष ॥ त्रीजे ज० ए० लाख वर्ष, उ० पूर्व कोमी १ ॥ चोथे ज० पूर्व कोमी १, उ० सागर १ तेना न्नाग १० करीए तेमांनो १ न्नाग ॥ पाचमे ज० न्नाग १, उ० न्नाग २ ॥ ठ्ठे ज० न्नाग २, उ० न्नाग ३ ॥ सातमे ज० न्नाग ३, उ० न्नाग ४ ॥ आठमे ज० न्नाग ४, उ० न्नाग ५ ॥ नवमे ज० न्नाग ५, उ० न्नाग ६ ॥ दशमे ज० न्नाग ६, उ० न्नाग ७ ॥ अग्यारमे ज० न्नाग ७, उ० न्नाग ० ॥ वारमे ज० न्नाग ०, उ० न्नाग ए ॥ तेरमे ज० न्नाग ए, उ० सागर १ ॥ १ ॥ वीजी नरके पाथमा ११

वे, त्या अकेका सागरना ११ भाग करीए, तेमांना बबे भाग वधारीए ॥ प्रथम पाथडे जº सागर १, उº सागर १ भाग २ ॥ बीजे पाथडे जº सागर १ भाग २, उº सागर १ भाग ४ ॥ त्रीजे जº सागर १ भाग ४, उº सागर १ भाग ६ ॥ चोथे पाथडे जº १ सागर ने ६ भाग, उº १ सागर ने ८ भाग ॥ पाचमे जº सागर १ भाग ८, उº १ सागर भाग १० ॥ छठ्ठे जº १ सागर भाग १०, उº २ सागर १ भाग ॥ सातमे जº २ सागर १ भाग, उº २ सागर ३ भाग ॥ आठमे जº २ सागर ३ भाग, उº २ सागर ५ भाग ॥ नवमे जº २ सागर ५ भाग, उº २ सागर ७ भाग ॥ दशमे जº २ सागर ७ भाग, उº २ सागर ९ भाग ॥ अग्यारमे जº २ सागर ९ भाग, उº ३ सागर ॥ २॥ त्रीजी नरके पाथडा ९ त्या एकेका सागरना ९ भाग करीए ते प्रतर प्रतरे ४ भाग वधारीए ॥ प्रथम पाथडे जº ३ सागर, उº ३ सागर ४ भाग ॥ बीजे जº ३ सागर ४ भाग, उº ३ सागर ८ भाग ॥ त्रीजे जº ३ सागर ८ भाग, उº ४ सागर ३ भाग ॥ चोथे जº ४ सागर ३ भाग, उº ४ सागर ७ भाग ॥ पाचमे जº ४ सागर ७ भाग, उº ५ सागर २ भाग ॥ छठ्ठे जº ५ सागर २

भाग, उ० ५ सागर ६ भाग ॥ सातमे ज० ५ सागर ६ भाग, उ० ६ सागर १ भाग ॥ आठमे ज० ६ सागर १ भाग, उ० ६ सागर ५ भाग ॥ नवमे ज० ६ सागर ५ भाग, उ० ७ सागर ॥ ३ ॥ चोथी नरके पाथडा ७ ॥ त्यां एकेका सागरना ७ भाग करीए तेमा त्रण त्रण भाग वधारीए ॥ प्रथम पाथडे ज० ७ सागर, उ० ७ सागर ३ भाग ॥ बीजे ज० ७ सागर ३ भाग, उ० ७ सागर ६ भाग ॥ त्रीजे ज० ७ सागर ६ भाग, उ० ८ सागर २ भाग ॥ चोथे ज० ८ सागर २ भाग, उ० ८ सागर ५ भाग ॥ पाचमे ज० ८ सागर ५ भाग, उ० ९ सागर १ भाग ॥ छठे ज० ९ सागर १ भाग, उ० ९ सागर ४ भाग ॥ सातमे ज० ९ सागर ४ भाग, उ० १० सागर ॥ ४ ॥ पांचमी नरके पाथडा ५ ॥ त्या एकेका सागरना ५ भाग करीए तेमा १ सागरने २ भाग प्रतरे प्रतरे वधारीए ॥ प्रथम पाथडे ज० १० सागर, उ० ११ सागर २ भाग ॥ बीजे ज० ११ सागर ने २ भाग, उ० १२ सागर ४ भाग ॥ त्रीजे ज० १२ सागर ४ भाग, उ० १४ सागर १ भाग ॥ चोथे ज० १४ सागर १ भाग, उ० १५ सागर ३ भाग ॥ पाचमे ज० १५ सागर ३ भाग, उ० १७ सागर ॥ ५ ॥ छठी नरके

पाथका ३ त्यां एकेका सागरना ३ जाग करीए तेमां २ जाग १ सागर प्रतरे प्रतरे वधारीए॥
पहेले प्रतरे ज० १७ सागर, उ० १८ सागर २ जाग ॥ बीजे ज० १८ सागर २ जाग, उ०
२० सागर १ जाग ॥ त्रीजे ज० २० सागर १ जाग, उ० २२ सागर ॥ ६ ॥ सातमी नरके
१ पाथको छे त्यां ५ नरकावासा छे. तेना नाम—काल ॥ १ ॥ महाकाल ॥ २ ॥ रौद्र
॥ ३ ॥ महारौद्र ॥ ४ ॥ ए चार नरकावासाए ज० २२ सागर, उ० ३३ सागर ॥ अपइ-
ठाण पाचमा नरकावासाए ३३ सागर जघन्योत्कृष्ट ॥ हवे जवनपतिनी स्थिति कहे छे–
तेमा दक्षिण दिशाना जवनपतिनी ज० १० हजार वर्पनी, उ० १ सागरनी ॥ तेनी देवीनी
ज० १० हजार वर्पनी, उ० साका त्रण पल्यनी तेना नवनीकायना देवतानी स्थिति ज०
१० हजार वर्पनी, उ० दाढ पल्यनी तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्पनी, उ० पोणा पल्यनी
उत्तर दिशाना जवनपतिनी ज० १० हजार वर्पनी, उ० १ सागर झाझेरी तेनी देवीनी
ज० १० हजार वर्पनी, उ० साकाचार पल्यनी ॥ नवनीकायनी ज० १० हजार वर्पनी, उ०
वे पल्य देशे उणी तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्पनी, उ० १ पल्य देशे उणी ॥ अथ बादर

पृथ्वीनी स्थिति सघळीनी ज० अतर्मुहूर्त्तनी ॥ हवे उत्कृष्टीनो विवरो कहे छे–सन्हानी उ० हजार वर्षनी ॥ सुद्धानी उ० १२ हजार वर्षनी ॥ वालुयानी उ० १४ हजार वर्षनी ॥ मणोशिलानी उ० १६ हजार वर्षनी ॥ शर्करानी उ० १८ हजार वर्षनी ॥ खरपृथ्वीनी उ० २२ हजार वर्षनी ॥ अपनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ७ हजार वर्षनी ॥ तेउनी ज० अतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३ अहोरात्रिनी ॥ वायुनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३ हजार वर्षनी ॥ वनस्पतिनी ज० १ अतर्मुहूर्त्तनी, उ० १० हजार वर्षनी ॥ सूक्ष्म ५ स्थावरनी ज० १ अतर्मुहूर्त्तनी, उ० तेटली ॥ बेइंद्रियनी ज० १ अतर्मुहूर्त्तनी, उ० १२ वर्षनी ॥ तेइंद्रियनी ज० १ अतर्मुहूर्त्तनी, उ० ४९ दिवसनी ॥ चउरिंद्रियनी १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ६ मासनी ॥ हवे तिर्यंच पंचेंद्रियनी स्थिति कहे छे–जलचर गर्भज समुर्छिमनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १ पूर्वक्रोडनी॥ स्थलचर गर्भजनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३ पल्योपमनी ॥ समुर्छिमनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ८४ हजार वर्षनी ॥ खेचर गर्भजनी ज० अतर्मुहूर्त्तनी, उ० पल्योपमना असंख्यातमा भागनी ॥ समुर्छिमनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ७२ हजार वर्षनी ॥ उरपर गर्भजनी

ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १ पूर्वकोमनी, समुर्छिमनो ज० १ अतर्मुहूर्त्तनी, उ० ५३ हजार वर्षनो ॥ नुजपर गर्नजनो ज० १ अतर्मुहूर्त्तनी, उ० १ पूर्वक्रोमीनी समुर्छिमनो ज० १ अतर्मुहूर्त्तनी, उ० ४२ हजार वर्षनी ॥ ए तिर्यंच पचेड्रियनी स्थिति कही ॥ हवे मनुष्यनी स्थिति कहे ठे–जे असख्याना आयुष्यना मनुष्य ठे तेनी ज० पल्योपमना असख्यातमा जागनी ॥ जे मनुष्य सख्याता वर्षना आयुष्यना ठे तेनी ज० १ अतर्मुहूर्त्तनी ॥ ए समस्तनी जघन्य स्थिति कही ॥ हवे उत्कृष्टीनो विवरो कहे ठे–देवकुरु उत्तरकुरुना मनुष्यनी स्थिति ३ पल्योपमनी ॥ हरिवास रम्यकवासे २ पल्यनी ॥ हेमवत एरणवते १ पल्यनी ॥ छप्पन अतरद्वीपे पल्योपमना असख्यातमा नागनी ॥ महाविदेहे १ पूर्वक्रोमनी ॥ नरत ऐरवते आराने मेळे आयुष्य तथा आरानु मानादि जाणवु ॥ प्रथम सुसमसुसम आरो ४ कोमाकोमी सागरोपमनो ॥ तेना मनुष्यनु ३ पल्यनु आयुष्य अपत्यप्रतिपालणा ४९ दिवस ॥ बीजो सुसम आरो ३ कोमाकोमी सागरोपमनो तेना मनुष्यनु आयुष्य २ पल्योपमनु अपत्यप्रतिपालणा ६४ दिवस ॥

त्रीजो सुसम डुसम आरो २ कोमाकोमी सागरनो. तेना मनुष्यनुं आयुष्य १ पल्यनुं, अ-पत्यप्रतिपालणा ७९ दिवस ॥ उतरते आरे पूर्व कोमीनु ॥ ते आरामांहि ७४ लाख पूर्व ३ वर्ष ७ मास शेष वाकी होय, त्यारे प्रथम तीर्थकर उपजे ॥ त्रण वर्ष साका आठ मास शेष वाकी होय, त्यारे ७४ लाख पूर्वनु आयुष्य पाळीने मोक्ष जाय ॥ पाच कल्याणीक होय ॥ डुसम सुसम चोथो आरो १ कोमाकोमी सागरमाहि ४२ हजार वर्ष ओछां. तेने धुरे आयुष्य पूर्व कोमीनु ॥ उतरते १०० वर्ष काकेरानुं ॥ ते आरामा २३ तीर्थकर होय, तेनु आयुष्य कहे छे ॥ वीजा तीर्थकरनुं ७२ लाख पूर्वनु आयुष्य ॥ त्रीजानुं ६० लाख पूर्वनु ॥ चोथानुं ५० लाख पूर्वनु ॥ पाचमानुं ४० लाख पूर्वनुं ॥ छठानुं ३० लाख पूर्वनु ॥ सातमानु २० लाख पूर्वनु ॥ आठमानुं १० लाख पूर्वनु ॥ नवमानुं २ लाख पूर्वनु ॥ दशमानु १ लाख पूर्वनुं ॥ अग्यारमानु ७४ लाख वर्षनुं ॥ वारमानु ७२ लाख वर्षनु ॥ तेरमानु ६० लाख वर्षनु ॥ चौदमानुं ५० लाख वर्षनु ॥ ॥ पंदरमानु १० लाख वर्षनु ॥ सोलमानु १ लाख वर्षनु ॥ सत्तरमानु ९५ हजार वर्षनु ॥ अढारमानुं ७४ हजार वर्षनु ॥ ओगणीसमानुं ५५ हजार

वर्षनु ॥ वीसमानु ३० हजार वर्षनु ॥ एकवीसमानुं १० हजार वर्षनु ॥ बावीसमानुं एक
हजार वर्षनु ॥ त्रेवीसमानु १०० वर्षनु ॥ चोवीसमानु ७२ वर्षनु आयुष्य जाणवु ॥ ए
चोथा आराना ७५ वर्ष ८॥ मास शेष थाकता होय त्यारे चरम तीर्थंकर उपजे ॥ ३ वर्ष
८॥ मास शेष थाकता होय त्यारे मोक्ष जाय ॥ पाच कल्याणीक होय ॥ पांचमो दुसम
आरो २१ हजार वर्षनो ॥ धूरे आयुष्य १०० वर्ष झाझेरानु उतरता २० वर्षनु ॥ छठ्ठो दुसम
दुसम आरो २१ हजार वर्षनो ॥ धुरे आयुष्य २० वर्षनु, उतरता १६ वर्षनु ॥ समुर्छिम
मनुष्यनु आयुष्य जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्तनु जाणवु ॥ व्यंतरनी स्थिति जघन्य १० हजार
वर्षनी, उ० १ पल्यनी तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० अर्द्ध पल्यनी ॥ ज्योति-
षीनी ज० पल्यना आठमा नागनी, उ० १ पल्य झाझेरी ॥ ए समुच्चय आयुष्य कह्युं ॥
हवे जुदो जुदो विवरो कहे छे–चन्द्रमानुं आयुष्य ज० पा पल्यनु, उ० १ पल्य ने लाख
वर्षनु ॥ सूर्यनु आयुष्य ज० पा पल्यनुं, उ० १ पल्य ने १ हजार वर्षनु ॥ ग्रहनुं ज० पा पल्यनुं, उ०
१ पल्यनु ॥ नक्षत्रनु ज० पा पल्यनु, उ० अर्द्ध पल्यनु ॥ तारानु ज० पल्यनो आठमो नाग,

उ० पल्यनो ८ मो नाग जाफेरुं ॥ हवे देवीनुं आयुष्य कहे ठे–चंद्रमानी देवीनुं आयुष्य ज० पा पल्यनु, उ० अर्द्धपल्य ने ५० हजार वर्षनुं ॥ सूर्यनी देवीनुं ज० पा पल्यनुं, उ० अर्द्ध पल्य ने ५०० वर्षनुं ॥ ग्रहनी देवीनुं ज० पा पल्यनु, उ० अर्द्ध पल्यनुं ॥ नक्षत्रनी देवीनु ज० पल्यनो आठमो नाग, उ० पा पल्यनु ॥ तारानी देवीनु ज० पल्यनो आठमो नाग, उ० पल्यनो आठमो नाग जाफेरु ॥ हवे वैमानिकनी स्थिति कहे ठे–जघन्य १ पल्योपम, उत्० ३३ सागरनी, ए समुच्चय स्थिति जाणवी ॥ हवे तेनो जुदो विवरो कहे ठे–प्रथम देवलोके ज० १ पल्यनुं, उत्० २ सागरनु ॥ तेनी देवीनुं ज० १ पल्योपमनुं उ० ७ पल्य ते परिग्रहीतनु तथा अपरिग्रहीतनुं ज० १ पल्यनु, उत्० ५० पल्यनु ॥ बीजे देवलोके ज० १ पल्य जाफेरु, उत्० २ सागर जाफेरुं ॥ तेनी देवीनु ज० १ पल्य जाफेरुं उत्० ए पल्य ते परिग्रहीतनु अने अपरिग्रहीतनुं ज० १ पल्य जाफेरु, उत्० ५५ पल्यनु ॥ त्रीजे देवलोके ज० २ सागरनुं, उत्० ७ सागरनु ॥ चोथे देवलोके ज० २ सागर जाफेरु, उत्० ७ सागर जाफेरु ॥ पांचमे देवलोके ज० ७ सागरनुं, उत्० १० सागरनु ॥ ठ्ठे देवलोके

ज० १० सागरनु, उत्० १४ सागरनु ॥ सातमे देवलोके ज० १४ सागरनु, उत्०१७ साग-
रनु ॥ आठमे देवलोके ज० १७ सागरनु, उत्० १८ सागरनु ॥ नवमे देवलोके ज० १८
सागरनु, उत्० १९ सागरनु ॥ दशमे देवलोके ज० १९ सागरनु, उत्० २० सागरनु ॥ अग्या-
रमे देवलोके ज० २० सागरनु, उत्० २१ सागरनु ॥ बारमे देवलोके ज० २१ सागरनु, उत्०
२२ सागरनु ॥ नव ग्रैवेयके पहेली त्रिके ज० २२ सागरनु उत् २३ सागरनु, ॥ एमज एकेक
सागर एकेक ग्रैवेयके वधारता जवु ॥ जावत् नवमी ग्रैवेयके ज० ३० सागरनु, उत्० ३१
सागरनु ॥ चार अनुत्तर विमाने ज० ३१ सागरनु, उत्० ३३ सागरनु ॥ सर्वार्थसिद्धे ३३ सागर
जघन्योत्कृष्ट ॥ हवे प्रतरनी स्थिति कहे छे—पहेला बीजा देवलोके प्रतर १३ छे, त्या
एकेका सागरना १३ भाग करीए तेमाना बबे भाग वधारता जइए ॥ पहेले प्रतरे ज०
१ पल्य, उत्० १ पल्य ने २ भाग ॥ बीजे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने ४ भाग ॥ त्रीजे
ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने ६ भाग ॥ चोथे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्यने ८ भाग ॥ पा-
चमे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने १० भाग ॥ छट्ठे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने १२ भाग ॥

सातमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर १ भाग ॥ आठमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ३ भाग ॥ नवमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ५ भाग ॥ दशमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ७ भाग ॥ अग्यारमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ९ भाग ॥ बारमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ११ भाग ॥ तेरमे ज० १ पल्य, उत्० २ सागर ॥ त्रीजे चोथे देवलोके प्रतर १२ छे त्यां एकेका सागरना १२ भाग करीए, तेमाना ५ भाग वधारता जइए ॥ पहेले प्रतरे ज० २ सागर, उत्० २ सागर ने ५ भाग ॥ बीजे ज० २ सागर, उत्० २ सागर १० भाग ॥ त्रीजे ज० २ सागर, उत्० ३ सागर ३ भाग ॥ चोथे ज० २ सागर, उत्० ३ सागर ८ भाग ॥ पाचमे ज० २ सागर, उत्० ४ सागर १ भाग ॥ छट्ठे ज० २ सागर, उत्० ४ सागर ६ भाग ॥ सातमे ज० २ सागर, उत्० ४ सागर ११ भाग ॥ आठमे ज० २ सागर, उत्० ५ सागर ४ भाग ॥ नवमे ज० २ सागर, उत्० ५ सागर ९ भाग ॥ दशमे ज० २ सागर, उत्० ६ सागर २ भाग ॥ अग्यारमे ज० २ सागर, उत्० ६ सागर ७ भाग ॥ बारमे ज० २ सागर, उत्० ७ सागर ॥ ब्रह्मलोक देवलोके प्रतर ६ छे. त्यां एकेका सागरना ६ भाग करीए, तेमांना ३

नाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० ७ सागर, उत्० ७ सागर ३ नाग ॥ बीजे ज० ७ सागर, उत्० ८ सागर ॥ त्रीजे ज० ७ सागर, उत्० ८ सागर २ नाग ॥ चोथे ज० ७ सागर, उत्० ९ सागर ॥ पाचमे ज० ७ सागर, उत्० ९ सागर ३ नाग ॥ छठे ज० ७ सागर, उत् १० सागर ॥ लातक देवलोके प्रतर ५ छे त्या एकेका सागरना ५ नाग करीए, तेमांना ४ नाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १० सागर, उत्० १० सागर ४ नाग ॥ बीजे ज० १० सागर, उत्० ११ सागर ३ नाग ॥ त्रीजे ज० १० सागर, उत्० १२ सागर २ नाग ॥ चोथे ज० १० सागर, उत्० १३ सागर १ नाग ॥ पाचमे ज० १० सागर, उत्० १४ सागर ॥ महाशुक्र देवलोके प्रतर ४ छे ॥ त्या एकेका सागरना ४ नाग करीए, तेमाना ३ नाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १४ सागर, उत्० १४ सागर ३ नाग ॥ बीजे ज० १४ सागर, उत्० १५ सागर २ नाग ॥ त्रीजे ज० १४ सागर, उत्० १६ सागर १ नाग ॥ चोथे ज० १४ सागर, उत्० १७ सागर ॥ सहसार देवलोके प्रतर ४ छे ॥ त्या एकेका सागरना ४ नाग करीए, तेमानो १ नाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १७ सागर, उत्० १७ सागर १ नाग ॥ बीजे ज० १७ सागर,

उत्० १७ सागर २ जाग ॥ त्रीजे ज० १७ सागर, उत्० १७ सागर ३ जाग ॥ चोथे ज०
१७ सागर, उत्० १८ सागर ॥ आणत देवलोके प्रतर ४ ठे. त्यां एकेक सागरना ४ जाग
करीए, तेमानो १ जाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १८ सागर, उत्० १८ सागर १ जाग ॥
बीजे ज० १८ सागर, उत्० १८ सागर २ जाग ॥ त्रीजे ज० १८ सागर, उत्० १८ सागर ३
जाग ॥ चोथे ज० १८ सागर, उत्० १९ सागर ॥ प्राणत देवलोके प्रतर ४ ठे त्यां एक सा-
गरना ४ जाग करीए तेमांना एकेको जाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १९ सागर, उत्०
१९ सागर १ जाग ॥ बीजे ज० १९ सागर, उत्० १९ सागर २ जाग ॥ त्रीजे ज० १९ सा-
गर, उत्० १९ सागर ३ जाग ॥ चोथे ज० १९ सागर, उत्० २० सागर ॥ आरण देवलोके
प्रतर ४ ठे. त्या एक सागरना ४ जाग करीए, तेमांनो एकेको जाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे
ज० २० सागर, उत्० २० सागर १ जाग ॥ बीजे ज० २० सागर, उत्० २० सागर २ जाग ॥
त्रीजे ज० २० मागर, उत्० २० सागर ३ जाग ॥ चोथे ज० २० सागर, उत्० २१ सागर ॥
अच्युत देवलोके प्रतर ४ ठे. त्यां एकेका सागरना ४ जाग करीए, तेमांनो एकेको जाग

भाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० ७ सागर, उत्० ७ सागर ३ भाग ॥ बीजे ज० ७ सागर, उत्० ८ सागर ॥ त्रीजे ज० ७ सागर, उत्० ८ सागर ३ भाग ॥ चोथे ज० ७ सागर, उत्० ९ सागर ॥ पांचमे ज० ७ सागर, उत्० ९ सागर ३ भाग ॥ छठे ज० ७ सागर, उत् १० सागर ॥ लांतक देवलोके प्रतर ५ छे त्यां एकेका सागरना ५ भाग करीए, तेमांना ४ भाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १० सागर, उत्० १० सागर ४ भाग ॥ बीजे ज० १० सागर, उत्० ११ सागर ३ भाग ॥ त्रीजे ज० १० सागर, उत्० १२ सागर २ भाग ॥ चोथे ज० १० सागर, उत्० १३ सागर १ भाग ॥ पांचमे ज० १० सागर, उत्० १४ सागर ॥ महाशुक्र देवलोके प्रतर ४ छे ॥ त्यां एकेका सागरना ४ भाग करीए, तेमांना ३ भाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १४ सागर, उत्० १४ सागर ३ भाग ॥ बीजे ज० १४ सागर, उत्० १५ सागर २ भाग ॥ त्रीजे ज० १४ सागर, उत्० १६ सागर १ भाग ॥ चोथे ज० १४ सागर, उत्० १७ सागर ॥ सहस्रार देवलोके प्रतर ४ छे ॥ त्यां एकेका सागरना ४ भाग करीए, तेमांनो १ भाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १७ सागर, उत्० १७ सागर १ भाग ॥ बीजे ज० १७ सागर,

उत्० १७ सागर २ जाग ॥ त्रीजे ज० १७ सागर, उत्० १७ सागर ३ जाग ॥ चोथे ज० १७ सागर, उत्० १८ सागर ॥ आणत देवलोके प्रतर ४ छे. त्यां एकेक सागरना ४ जाग करीए, तेमानो १ जाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १८ सागर, उत्० १८ सागर १ जाग ॥ बीजे ज० १८ सागर, उत्० १८ सागर २ जाग ॥ त्रीजे ज० १८ सागर, उत्० १८ सागर ३ जाग ॥ चोथे ज० १८ सागर, उत्० १९ सागर ॥ प्राणत देवलोके प्रतर ४ छे. त्यां एक सागरना ४ जाग करीए तेमाना एकेको जाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १९ सागर, उत्० १९ सागर १ जाग ॥ बीजे ज० १९ सागर, उत्० १९ सागर २ जाग ॥ त्रीजे ज० १९ सागर, उत्० १९ सागर ३ जाग ॥ चोथे ज० १९ सागर, उत्० २० सागर ॥ आरण देवलोके प्रतर ४ छे त्या एक सागरना ४ जाग करीए, तेमानो एकेको जाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० २० सागर, उत्० २० सागर १ जाग ॥ बीजे ज० २० सागर, उत्० २० सागर २ जाग ॥ त्रीजे ज० २० सागर, उत्० २० सागर ३ जाग ॥ चोथे ज० २० सागर, उत्० २१ सागर ॥ अच्युत देवलोके प्रतर ४ छे त्या एकेका सागरना ४ जाग करीए, तेमानो एकेको जाग

वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० २१सागर,उत्०२१ सागर १ भाग ॥ बीजे ज० २१सागर, उत्० २१ सागर २ भाग ॥ त्रीजे ज० २१ सागर, उत्० २१ सागर ३ भाग ॥ चोथे ज०२१ सागर, उत्० २२ सागर ॥ ते उपर नव नव ग्रैवेयके एकेक सागर वधारीए ॥ त्यां प्रतर नथी ॥ हवे देवीनो विचार कहे छे–सौधर्म देवलोके अपरिग्रहित देवीना ६ लाख विमान छे ॥ तेमां जेनु १० पल्यनु आयुष्य छे ते सनत्कुमार इन्द्रने भोग आवे ॥ २० पल्यनी ब्रह्मलोक देवलोकना देवताने भोग आवे ॥ ३० पल्यनी महाशुक्रना देवताने भोग आवे ॥ ४० पल्यनी आणतना देवताने भोग आवे ॥ ५०पल्यनी आरणना देवताने भोग आवे ॥ ईशान देवलोके ४ लाख विमान छे ॥ तेनु एक पल्य झाझेरानु आयुष्य छे ते ईशानना देवताने भोग आवे ॥ १५ पल्यनी देवी माहेंद्रना देवताने भोग आवे॥२५ पल्यनी देवी लांतकना देवताने भोग आवे ॥ ३५ पल्यनी देवी सहस्रारना देवताने भोग आवे ॥ ४५ पल्यनी देवी प्राणतना देवताने भोग आवे ॥५५ पल्यनी देवी अच्युतना देवताने भोग आवे ॥ पहेले बीजे देवलोके भोग मनुष्यनी रीते ॥ त्रीजे चोथे तेमज जाय ॥ पाचमे

छठ्ठे स्पर्शभोग ॥ सातमे आठमे रूपभोग ॥ नवमे दशमे शब्दभोग ॥ अग्यारमे बारमे नजर मेळानो भोग ॥ ते उपरांत अल्प विकार, असंख्य सुख छे ॥

इति त्रीजु स्थितिद्वार संपूर्ण ॥ ३ ॥

---

## हवे चोथु अवगाहना द्वार कहे छे ॥

सर्व जीवनी अवगाहना जघन्य आंगुलना असंख्यातमा भागनी जाणवी ॥ उत्कृष्टीनो विवरो कहे छे-पहेली नरके पोणा आठ धनुष्य ने ६ आंगुल ॥ बीजीए १५॥ धनुष्य १२ आंगुल ॥ त्रीजीए ३१। धनुष्य ॥ चोथीए अवगाहना ६२॥ धनुष्य ॥ पाचमीए १२५ मनुष्य ॥ छठ्ठीए २५० धनुष्य ॥ सातमीए ५०० धनुष्यनी काया जाणवी ॥ हवे प्रतर प्रतरनी जुदी अवगाहना कहे छे-पहेली नरके १३ प्रतर छे. तेमां प्रथम पाथडे ३ हाथनी काया ते उपर १ हाथ ८॥ आंगुल वधारीए ॥ बीजे पाथडे १ धनुष्य १ हाथ ८॥ आंगुल ॥ त्रीजे १ धनुष्य ३ हाथ १७॥ आंगुल ॥ चोथे २ धनुष्य

२ हाथ १॥ आगुल ॥ पाचमे ३ धनुष्य १० आगुल ॥ छट्ठे ३ धनुष्य २ हाथ १७॥ आगुल ॥ सातमे ४ धनुष्य १ हाथ ३ आगुल ॥ आठमे ४ धनुष्य ३ हाथ ११॥ आगुल ॥ नवमे ५ धनुष्य १ हाथ २० आगुल ॥ दशमे ६ धनुष्य ४॥ आगुल ॥ अग्यारमे ६ धनुष्य २ हाथ १३ आगुल ॥ बारमे ७ धनुष्य २१॥ आगुल ॥ तेरमे ७ धनुष्य ३ हाथ ६ आगुल ॥ बीजी नरके पाथडा ११ छे ॥ त्या ३ हाथ ३ आगुल पाथडे पाथडे वधारीए ॥ प्रथम पाथडे ७ धनुष्य ३ हाथ ६ आगुल ॥ बीजे ८ धनुष्य २ हाथ ९ आगुल ॥ त्रीजे ९ धनु-ष्य १ हाथ १२ आगुल ॥ चोथे १० धनुष्य १५ आगुल ॥ पाचमे १० धनुष्य ३ हाथ १८ आगुल ॥ छट्ठे ११ धनुष्य २ हाथ २१ आगुल ॥ सातमे १२ धनुष्य २ हाथ ॥ आठमे १३ धनुष्य १ हाथ ३ आगुल ॥ नवमे १४ धनुष्य ६ आगुल ॥ दशमे १४ धनुष्य ३ हाथ ९ आगुल ॥ अग्यारमे १५ धनुष्य २ हाथ १२ आगुल ॥ त्रीजी नरके पाथडा ९ छे ॥ त्या ७ हाथ, १९॥ आगुल पाथडे पाथडे वधारीए ॥ प्रथम पाथडे १५ धनुष्य २ हाथ १२ आगुल ॥ बीजे १७ धनुष्य २ हाथ ७॥ आगुल ॥ त्रीजे १९ धनुष्य २ हाथ ३ आगुल ॥ चोथे

धनुष्य २ हाथ ३ आंगुल ॥ चोथे

२१ धनुष्य १ हाथ २२॥ आंगुल ॥ पांचमे २३ धनुष्य १ हाथ १७ आंगुल ॥ छठे २५ धनुष्य १ हाथ १३॥ आगुल ॥ सातमे २७ धनुष्य १ हाथ ए आगुल ॥ आठमे २ए धनुष्य १ हाथ ४॥ आंगुल ॥ नवमे ३१ धनुष्य १ हाथ ॥ चोथी नरके पाथमा ७ छे ॥ त्या ५ धनुष्य २० आगुल, एकेके पाथमे वधारीए ॥ पहेले पाथमे ३१ धनुष्य १ हाथ ॥ बीजे ३६ धनुष्य १ हाथ २० आगुल ॥ त्रीजे ४१ धनुष्य २ हाथ १६ आगुल ॥ चोथे ४६ धनुष्य ३ हाथ १२ आंगुल ॥ पांचमे ५२ धनुष्य ७ आंगुल ॥ छठे ५७ धनुष्य १ हाथ ४ आंगुल ॥ सातमे ६२ धनुष्य २ हाथ ॥ पाचमी नरके पाथमा ५ छे. त्यां २५ धनुष्य २ हाथ १२ आंगुल एकेके पाथमे वधारीए. प्रथम पाथमे ६२ धनुष्य २ हाथ ॥ बीजे ७७ धनुष्य १२ आंगुल ॥ त्रीजे ए३ धनुष्य ३ हाथ ॥ चोथे १०ए धनुष्य १ हाथ १२ आगुल ॥ पांचमे १२५ धनुष्य ॥ छट्ठी नरके पाथमा ३ छे ॥ त्या एकेके पाथमे ६२ धनुष्य २ हाथ वधारीए ॥ प्रथम पाथमे १२५ धनुष्य ॥ बीजे १७७ धनुष्य २ हाथ ॥ त्रीजे २५० धनुष्य ॥ सातमी नरके ५०० धनुष्यनी काया छे ॥ ते नवधारणी काया जाणवी ॥ वैक्रेय करे तो जघन्य आंगुलनो सख्यातमो

भाग, उत्कृष्टी वैक्रेय करे तो बमणी काया करे ॥ ए नारकीनी अवगाहना करी ॥ हवे
भवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक देवलोक बे सुधी भवधारणी ७ हाथनी काया ॥
त्रीजे चोथे ६ हाथ ॥ पाचमे छठ्ठे ५ हाथ ॥ सातमे आठमे ४ हाथ ॥ उपरना ४ देवलोके
३ हाथनी काया ॥ ए देवता उत्तर वैक्रेय करे तो ज० अंगुलनो सख्यातमो भाग, उत्० लाख
जोजन करे एथी उपरना देवता उत्तर वैक्रेय न करे नव ग्रैवेयके २ हाथनी काया ॥ चार
अनुत्तर विमाने १ हाथनी काया ॥ सर्वार्थसिद्ध विमाने १ हाथ माठेरी काया ॥ ए अव-
गाहना उच्छेद आगुले करी सर्वेनी जाणवी ॥ हवे सिद्धनी अवगाहना ज० १
हाथ ८ आगुल, मध्यम ४ हाथ १६ आगुल, उत्० ३३३ धनुष्य ३२ आगुल ॥ बादर,
पृथ्वी, पाणी, तेउ, वाउ अने सूक्ष्म एकेंद्रिय ए सर्वेनी ज० उ० आंगुलना असख्या-
तमा भागनी अवगाहना जाणवी ॥ प्रत्येक वनस्पतिनी ज० अंगुलनो असख्यातमो भाग,
उ० हजार जोजन झाझेरी कमलाना रोमाने न्याये ॥ सूक्ष्म वनस्पतिना असंख्यात शरीरे
एक सूक्ष्म वायुनु शरीर थाय ॥ सूक्ष्म वायुना असंख्य शरीरे एक सूक्ष्म तेउनु शरीर थाय ॥

सूक्ष्म तेउना असख्य शरीरे एक सूक्ष्म अपनु शरीर थाय ॥ सूक्ष्म अपना असंख्य शरीरे एक सूक्ष्म पृथ्वीनुं शरीर थाय ॥ सूक्ष्म पृथ्वीने असंख्य शरीरे एक वादर वायुनुं शरीर थाय ॥ वादर वायुने असख्य शरीरे एक वादर तेउनुं शरीर थाय ॥ वादर तेउने असख्य शरीरे एक वादर अपनुं शरीर थाय ॥ वादर अपने असंख्य शरीरे एक वादर पृथ्वीनु शरीर थाय ॥ एटले केवडो थयो ते उपर चूर्णपीसिका दासीनुं दृष्टांत कहे छे-बत्रीस वर्षनो जुवान जोध वळवत पुरुष रत्नने एरण उपर मुकीने गाढा घणनो प्रहार करे तो ते रत्न एरणमा खुंचे पण भांगे नहि ॥ एवुं रत्न ते चूर्णपीसिका दासी आगळी ने अगुठा वच्चे चापीने तेनो साथीयो काढे एवी वळवत ते रत्नने वज्रमय खरल उपर मुके, वज्रमय लोढावती २१ वार पीसे, वाटे तो ते जीव केटलाएक विलय जाय, केटलाएक किलामना पामे, केटलाएके जाएयुं पण नथी ॥ वळी नगरने दृष्टांते-जेम कोइ नगर मोटु होय, ते नगरने क्याक पासे जुरू होय, ते जुरू करतां केटलाएक वीलय जाय, केटलाएक कीलामना पामे, केटलाके जाएयुं पण नथी, एवु सूक्ष्म शरीर छे ॥ वे इन्द्रि-